रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-11, कुल पृष्ठ-36, श्रावण-भाद्रपद, विक्रम सम्वत् 2080, अगस्त, 2023

तिहाड़ जेल के महानिदेशक ने की सेवा भारती की सराहना

जब दिल्ली में यमुना नदी में उफान आया तो भयानक बाढ़ आई। इससे कई इलाके बुरी तरह प्रभावित हुए। लॉकडाउन जैसा हाल हो गया। जीवन अस्त व्यस्त हो गया। जिन सड़कों पर दिनभर वाहनों की आवाजाही होती थी वो जलमग्न हो गई। लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। उस समय सेवा भारती का हर कार्यकर्ता बाढ़ पीड़ितों के मध्य सेवा कार्य हेतु अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुका था। ऐसे ही दिल्ली में जहां पाकिस्तान से आए हिन्दू शरणार्थियों ने अपना रेन बसेरा बना रखा था, वो भी बाढ़ के पानी में जलमग्न हो गया। वहाँ रहने वाले समस्त परिवार अपने रोज के जीवन व रोटी के लिए चिंतित हो गए, लेकिन उनकी चिंताओं को निरर्थक कर सेवा भारती की करावल नगर व ब्रह्मपुरी जिले की टीम ने उस सिग्नेचर ब्रिज पर उनके पुनः आशियाने खड़े करना आरंभ कर दिया। उन परिवारों के लिए रहने के लिए टेंट, भोजन, दूध, पानी, दवा, ब्रेड, बिस्किट, सोने के लिए कपड़े आदि की व्यवस्था हेतु सेवा भारती का हर कार्यकर्ता जुट गया। अन्य स्थानों की तरह, उस स्थान पर भी सेवा भारती के सहयोग हेतु तिहाड़ जेल के प्रशासन ने भी अपनी कमर कसी और दूध, ब्रेड, बिस्कुट इत्यादि की व्यवस्था करवाई।

आईपीएस अधिकारी श्रीमान संजय बेनीवाल महानिदेशक (तिहाड़ जेल) ने सिग्नेचर ब्रिज पर चल रहे सेवा कार्यों का अवलोकन कर कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया। उन्होंने सेवा भारती की प्रशंसा भी की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक माननीय कुलभूषण आहूजा जी ने भी पूरी दिल्ली में बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में चल रहे सेवा कार्यों की जानकारी सेवा भारती के संगठन मंत्री श्रीमान शुकदेव जी व महामंत्री श्रीमान सुशील जी से ली व सहयोग के लिए कार्यकर्ताओं को आशान्वित किया।

श्री संजय बेनीवाल को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित करते सेवा भारती के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल और प्रांत संघचालक श्री कुलभूषण आहूजा

बाढ़ राहत शिविर का अवलोकन करते हुए श्री संजय बेनीवाल पीछे दिख रहे हैं सुशील जी

कार्यकर्ताओं के साथ बैठे हैं (बाएं से) श्री संजय बेनीवाल, श्री कुलभूषण आहूजा और श्री शुकदेव

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-11, कुल पृष्ठ-36, अगस्त, 2023

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		4
बाढ़ पीड़ितों की सेवा में लगे सेवा भारती के कार्यकर्ता	अंजु पांडेय	6
बाढ़ का कहर - प्रकृति से छेड़छाड़	दीप्ति एस अग्रवाल	7
सर्वरक्षा का पर्व : रक्षाबंधन	निशान्त	12
विश्वास का बंधन	कृष्ण कुमार यादव	14
राजनीति के आदर्श-प्रतिमान : श्रीकृष्ण	डॉ. कृष्णगोपाल मिश्र	16
श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भगवान श्रीकृष्ण	डॉ. रामप्रकाश शर्मा	19
कहानी : प्यार में दरार	आचार्य मायाराम पतंग	20
तिहाड़ जेल के महानिदेशक ने की सेवा भारती की सराहना		22
श्री अरविन्द जी का राष्ट्रवाद	एफ.सी. भाटिया	23
जीवन का संघर्ष		24
मन ही कर्ता-मन ही भोक्ता	इंदिरा मोहन	25
श्रद्धांजलि : तन, मन से राष्ट्र को समर्पित		27
पत्तलों से बचेगा पर्यावरण	राममहेश मिश्र	28
कविता : स्वतंत्रता दिवस	आचार्य मायाराम पतंग	29
देशहित में है समान नागरिक संहिता	प्रतिनिधि	30
श्रावण मास में अधिक मास	आचार्य धर्मानन्द जोशी	32
कटु सत्य		34

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

यशोदा माँ की अद्‌भुत सेवा

आपने आज तक यह अवश्य सुना होगा कि अमुक सेठ ने सेवा कार्य के लिए दान दिए। यह भी सुना होगा कि किसी पैसे वाले सज्जन ने आम लोगों के लिए धर्मशाला या अस्पताल का निर्माण करवाया है। यह भी सुना होगा कि किसी सेवाभावी ने गरीब बच्चों की पढ़ाई के लिए विद्यालय बनवाया। लेकिन आज तक शायद यह नहीं सुना होगा कि किसी मंदिर के बाहर सड़क के किनारे भक्तों के जूते-चप्पलों की देखेरख करने वाली किसी वृद्ध महिला ने गोशाला और धर्मशाला का निर्माण किया है।

आजकल एक ऐसी ही महिला की सेवा-गाथा की बड़ी चर्चा है। लोग इन महिला को यशोदा माँ के नाम से जानते हैं। प्राय: पीली साड़ी पहनती हैं और गले में भगवान श्रीकृष्ण की कंठमाला धारण करती हैं। ये माता जी वृन्दावन में श्री बाँके बिहारी मंदिर के बाहर पिछले 30 वर्ष से मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं के जूते- चप्पलों की रखवाली करती हैं। इसके बदले उन्हें भक्त अपनी श्रद्धा से कुछ पैसे दे देते हैं। इस पैसे को वह बहुत ही सहेज कर रखती हैं। कुछ समय पहले उनके पास 51,10, 025 (इक्यावन लाख दस हजार पच्चीस रु.) जमा हुए। इनमें से 40,00,000 रु. खर्च कर उन्होंने एक गोशाला और धर्मशाला का निर्माण करवाया है।

वृन्दावन में सड़क के किनारे पादुका सेवा करती महिला, जिन्हें लोग यशोदा माँ कहते हैं।

उन माताजी के बारे में पता चला है कि वे केवल 20 वर्ष की आयु में विधवा हो गई थीं। इसके बाद उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया और अपने को पूरी तरह भक्ति में लगा दिया। पेट भरने के लिए वे मंदिर के बाहर बैठ जाती थीं। भक्त कुछ न कुछ देते थे और उनका काम चल जाता था। खर्च करने के बाद जो पैसा बचता था, उसे वह संभाल कर रखती गईं। अब उसी पैसे से उन्होंने गोशाला और धर्मशाला का निर्माण कराया है।

एक ऐसी ही सेवा-गाथा बिहार की भी है। मुंगेर से भागलपुर जाने वाली सड़क के किनारे एक जगह लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना एक पक्का कुआँ है। उसे 'श्योमा पिसनहारी' का कुआँ कहते हैं। इसे श्योमा नामक सत्तर वर्षीया वृद्धा ने बनवाया था। आज भी वह कुआँ उसके नाम से प्रसिद्ध है। मात्र 13 वर्ष की आयु में विवाह के एक वर्ष के अन्तराल में श्योमा विधवा हो गई। ससुराल वालों ने उसका तिरस्कार किया। श्योमा ने सोचा, अभी तो मैं युवती हूँ। मेहनत, मजदूरी से ही पेट भरेगा, समय कटेगा। अपने बलबूते परिश्रम कर रोटी खाऊँगी और परोपकार का भी काम करूँगी। उसने श्रम का तपस्यामय जीवन अपनाया। प्रात: भोर उगने से पहले उठती, गेहूँ पीसती। फिर प्याऊ पर काम करती, घास काट कर बेचती। जो भी काम मिलता उसे पूरे मन से करती। किसी के लिए भोजन बना देती, किसी के कपड़े धो देती, सफाई कर देती। दोपहर को आराम कर गेहूँ पीसती, सांझ ढले चर्खे पर सूत काटती। काम ही काम, काम ही उसका जीवन बन गया। वह तो इस काम के द्वारा अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में जुटी थी। उसने जीवन भर मेहनत कर 500 रुपए कमाये जिन्हें वह किसी परोपकार के काम में लगाना चाहती थी। आते-जाते उसने अनुभव किया कि यहाँ गाँव के आस-पास दूर-दूर तक कच्ची सड़कें हैं। यात्रियों के लिए जल पीने का स्थान भी नहीं है। यात्रियों की इस कठिनाई ने श्योमा के हृदय को छू लिया। उसने अपने जीवन भर की सारी कमाई से पक्का कुआँ बनवाने का संकल्प किया। उन दिनों सस्ता जमाना था, कुआँ बन गया। आज भी वह कुआँ उस विधवा स्त्री की कर्तव्यनिष्ठा, धर्मपरायणता, परिश्रम, संयम तथा त्याग की अपूर्व कहानी कह रहा है। ❐

पाथेय

निंदन्तुनीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु। लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।।
अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा। न्यायात्पथ प्रविचलन्तिपदं न धीरा।।

सरलार्थ : भर्तृहरि ने नीतिशास्त्र में बताया है किचतुर लोग चाहे निंदा करें या प्रशंसा करें। लक्ष्मी चाहेधीर जनों पर कृपा करें या उन्हें निर्धन करके चली जाए। उनकी आजही मृत्यु हो जाएं या युगों तक जीवित रहें, थीर व्यक्ति कभीसत्य तथा न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते हैं।

शाश्वत धर्म

धन की शुद्धि दान से होती हैं। शरीर की शुद्धि स्नान से तथा आत्मा की शुद्धि मन के संयम से होती है। शास्त्र कहते हैं दानं दुर्गति नाशकम्। उचित समय पर सुपात्र को दिया गया दान कल्याणकारी होता है। दानदाता को अहंकार कभी नहीं आना चाहिए। अहंकार सभीअनर्थों का मूल है। सन्मार्ग के साधक को अहंकार से प्रयास पूर्वक बचना चाहिए।

– परमपूजनीय गुरुजी

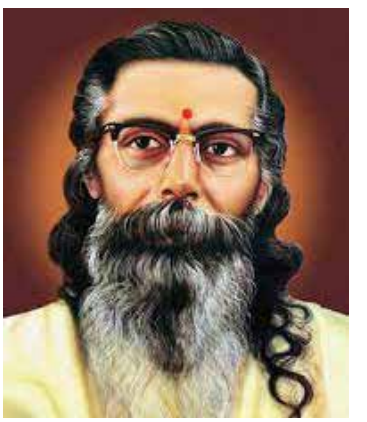

अगस्त 2023 माह के स्मरणीय दिवस

दिनांक	वार	महत्व
1/8/23	मंगलवार	लोकमान्य तिलक निधन
6/8/23	रविवार	मित्रता दिवस
7/8/23	सोमवार	श्री टैगोर निधन
9/8/23	बुधवार	स्वतंत्रता संग्राम दिवस
11/8/23	शुक्रवार	श्रीखुदीराम बोसशहीद दिवस
13/8/23	रविवार	श्रीमती अहिल्याबाई होलकर निधन
14/8/23	सोमवार	अखण्ड भारत विभाजन दिवस
15/8/23	मंगलवार	स्वतंत्रता दिवस
16/8/23	बुधवार	रामकृष्ण परमहंस समाधि दिवस
17/8/23	गुरूवार	मदनलाल ढींगरा बलिदान दि.
19/8/23	शनिवार	तीज
21/8/23	सोमवार	नागपंचमी
23/8/23	बुधवार	महात्मा तुलसीदास जयन्ती
29/8/23	मंगलवार	राष्ट्रीय खेल दिवस
30/8/23	बुधवार	रक्षाबंधन का त्योहार

बाढ़ पीड़ितों की सेवा में लगे सेवा भारती के कार्यकर्ता

■ अंजू पांडेय

कहते हैं कि तबाही जब भी आती है कुछ न कुछ लेकर जरूर जाती है। वह आती है भले ही दबे पांव पर अपनी निशानी छोड़कर ही जाती है। इसी तरह से वर्तमान में कई राज्यों में आंधी, तूफान, बारिश और तबाही का मंजर दिखाई दे रहा है। हरियाणा के हथिनी कुंड से यमुना नदी में छोड़े गए पानी के कारण राजधानी दिल्ली भी इससे अछूती नहीं रही। चारों तरफ यमुना से घिरी हुई दिल्ली तो वैसे भी हमेशा संकट के साए में ही रहती है। जैसे-जैसे यमुना में जलस्तर बढ़ने लगा लोगों के हाथ-पैर फूलने लगे, कहां जाएं क्या करें? जब तक यह समझ पाते तब तक यमुना ने अपना रौद्र रूप दिखाना शुरू कर दिया। लोग अपनी जान बचाकर जैसे-तैसे बाहर निकले। न जाने कितने पशु-पक्षी तो यमुना में ही विलीन हो गए।

यमुना के आसपास वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया है। दिल्ली के आसपास के इलाकों में जहां खेती होती है वहां पानी भर जाने से फसलें बर्बाद हो गई हैं। मंडियों में स्थानीय फल-सब्जी की आवक बंद होने से दाम बढ़ गए। कश्मीरी गेट, अंतरराज्यीय बस अड्डा, सिविल लाइन, मजनू का टीला, वजीराबाद सिग्नेचर ब्रिज के आसपास का क्षेत्र, उस्मानपुर, शास्त्री पार्क, गांधीनगर, मयूर विहार खादर, जैतपुर, जमुना बाजार, रेनी वेल, लालकिला, राजघाट, आईटीओ समेत अन्य कई क्षेत्रों में 5-6 फुट तक पानी भर गया था। इस कारण बड़ी संख्या में लोग सड़कों पर आ गए हैं। तिनका तिनका करके बनाई गृहस्थी पानी में बह गई और लोग देखते ही रहे, क्योंकि ऐसे समय पर अपनी जान बचाना मुश्किल होता है।

समय की गंभीरता को देखते हुए सेवा भारती दिल्ली के कार्यकर्ता और संघ के स्वयंसेवकों ने मिलकर दिल्ली के 10 स्थानों पर राहत शिविर लगाए हैं, जहां पर उन सभी बाढ़ग्रस्त लोगों के लिए दैनिक उपयोग की वस्तुएं जैसे:- तिरपाल, लोगों के लिए कपड़े, भोजन, पीने का पानी, बायो टॉयलेट, बच्चों के लिए दूध, बिस्किट, जलपान की व्यवस्था, बिछाने के लिए चादर, हाथ के पंखे, मच्छरदानी, टॉर्च, सूखा राशन इसके अलावा सभी राहत शिविरों में हेल्थ चेक अप कैंप और दवाइयों की उपलब्धता भी कराई जा रही है। प्रत्येक दिन एन.एम.ओ के माध्यम से तीन से चार डॉक्टर इस कार्य में सेवा भारती के साथ कार्य कर रहे हैं। समाज के साथ हुई इस त्रासदी में समाज के ही लोग सहयोग भी कर रहे हैं सबके सहयोग से लोगों तक मदद पहुंचाई जा रही है। पानी में घुसकर अपनी जान की परवाह किए बगैर कार्यकर्ताओं ने बहुत से लोगों को बाढ़ग्रस्त क्षेत्र से निकालने का भी सार्थक कार्य किया।

कई जगह पशु भी निकाले गए, फिर भी यह सब प्रयास ऊंट के मुंह में जीरा के बराबर ही है। अभी परिस्थितियों को सुधरने में कितना समय लगेगा, इसका अंदाजा नहीं है, फिर भी जब तक सहयोग की आवश्यकता है तब तक सेवा भारती के कार्यकर्ता और संघ के अन्य स्वयंसेवी संगठनों के स्वयंसेवक इस कार्य में निरंतर लगे रहेंगे। इसके बाद इनके पुनर्वास की भी चिंता कार्यकर्ता कर रहे हैं जिसके लिए सहयोग की अपेक्षा अन्य सभी समाजसेवियों और सामाजिक कार्यकर्ता बंधुओं से की जा रही है।

हजारों परिवारों के लिए सामान जुटाना भी कोई छोटा काम नहीं है। इसके लिए भी समाज से सहयोग लेकर सभी प्रभावित लोगों तक पहुंचाया जा रहा है। इस मुहिम में सभी लोग साथ भी दे रहे हैं और सहयोग भी कर रहे हैं आगे भी इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा के साथ.... ❐

बाढ़ का कहर - प्रकृति से छेड़छाड़

■ दीप्ति एस अग्रवाल

आजकल, देश के हालात से आप सभी लोग अवगत ही होंगे। हर जगह बाढ़ का कहर है, न केवल पहाड़ ही अपितु मैदानी इलाकों पर भी बाढ़ ने सितम ढा रखा है। कितने ही लोग अपने घरों से बेघर हुए, कितनों की जान गई, फसलों को नुकसान हुआ, मवेशियों को भी हमारी वजह से अपने जान से हाथ धोना पड़ा। यह स्थिति भारत के पूर्व उत्तर राज्यों में आम बात थी, परंतु आज लगभग भारत का 65% भाग जलमग्न है। यह हाल हमने 2013 में केदारनाथ में आई त्रासदी सबसे पहली बार देखी थी, किंतु हमने इससे कुछ ना सीखा। हमने व देश की सरकारों ने इसकी रोकथाम के लिए कुछ नहीं किया। तभी से हम हर वर्ष किसी न किसी प्रदेश में बाढ़ के हालात देख रहे हैं। एक दूसरे पर केवल दोषारोपण ही किया।

हर समस्या का एक समाधान होता है। हम सबको ही मिलकर छोटे-छोटे प्रयास करने होंगे, जिससे की बढे लक्ष्य की प्राप्ति हो सके।

पर इसकी शुरुआत कहां और कब, कैसे होगी, यह पता नहीं। जानकारी तो हर किसी को होती है पर हम अनजान बनने के प्रयास करते हैं। पढ़ाई लिखाई में तो मनुष्य ने बहुत तरक्की की। परंतु, पानी व जीवन की खोज के लिए हम चांद व अन्य ग्रहों तक पहुंच रहे हैं। पर अपनी धरती मां का ख्याल ही नहीं रख पा रहे हैं। अत्यधिक विकासशील बनकर हम जंगलों को खत्म कर रहे हैं। जिस से बहते पानी की रोकथाम नही हो पा रही है। बाढ़ आने का सबसे बड़ा कारण यही है। जंगली जानवर अपने प्राकृतिक घरों को छोड़ बस्तियों की ओर चल पड़े हैं। चिड़ियों के आशियाने खत्म होते जा रहे हैं। बहुत सारी प्रजातियां लुप्त होती जा रही है। भोजन तंत्र (फूड साइकल) में बदलाव होने की वजह से, प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। प्लास्टिक का अत्यधिक उत्पाद व इस्तेमाल इस समस्या को और बढ़ावा दे रहा है। क्योंकि हजारों साल ना खत्म होने वाला यह रासायनिक पदार्थ बनाया तो मनुष्य ने, पर इसका उपयोग किस हद तक करना है, यह नहीं सोच पा रहा है। प्लास्टिक के दलदल मनुष्य सभ्यता धस्ती जा रही है।

सभी समस्या एक दूसरे पर निर्भर करती है। जैसे जैसे हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं, उतने ही हम अस्वस्थ होते जा रहे हैं। खानपान में बदलाव, फोन का अधिक इस्तेमाल, एयर कंडीशनर का प्रयोग में बढ़ावा, इन सभी बातों से धरती के तापमान में बढ़ोतरी हो रही है। जिससे मौसम में बदलाव हो रहे हैं। बे मौसम की बारिश, बादल फटना, समुद्री तूफान आदि कई प्रकार की नई नई प्राकृतिक आपदा, आफत को हम निमंत्रण दे रहे हैं। किंतु हमें क्या, हम क्या कर सकते हैं, हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं, मैं क्या कर सकता हूं। केवल इन्हीं कुछ बातों से कहकर हम अपना पल्ला झाड़ देते हैं। क्या यही कहने हेतु ही हमने अपने आपको इतना प्रगतिशील बनाया था, जिससे हम अपनी धरती के समापन या बर्बादी की तरफ बढ़ते जा रहे हैं।

समय आज खत्म नहीं हुआ है। मैं अपना प्रयास करती हूं और कर रही हूं। आप सब भी अपने नींद से जागे जो कार्य हम अपने घर में आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए करते हैं। जो कुछ सुख सुविधा अपनी आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए हम संजो के रखते हैं, वह सभी ही हमें अपनी धरती मां को भी बचाने के लिए करना होगा।

प्रण करें अपने जीवन में एक पेड़ अवश्य लगाएंगे, प्लास्टिक का प्रयोग कम से कम करेंगै, आधुनिक उपकरणों का प्रयोग केवल जरूरत हैतू ही करेंगै, प्राकृतिक भोजन करें, समय से घर का बना भोजन ही करें, पैकेट में आने वाली वस्तुएं व पेए से बचें, एसी का प्रयोग बहुत जरूरत पड़ने पर ही करें। हर एक व्यक्ति प्रयास करें और दूसरों को भी प्रेरित करने का प्रयास करें। मैंने अपना प्रयास किया अब आपकी बारी है। ❐

बाढ़ राहत केंद्र						
क्रम	जिला	स्थान	केंद्र प्रमुख का नाम	केंद्र प्रमुख का नंबर	कार्यकर्ताओं की संख्या	वॉलिंटियर्स की संख्या
1	करावल नगर	सिग्नेचर ब्रिज	जयपाल जी	8920839328	5	20
2	ब्रह्मपुरी	उस्मानपुर पुस्ता	मुकेश जी	9310560888	12	10
3	मयुर विहार	मेट्रो स्टेशन	रूपम जी	9910525043	15	18
4	इंद्रप्रस्थ	यमुना बैंक	नीलम राणा जी	8860496936	11	21
5		खेल गॉव	विषन सिंह जी	7827499102	8	15
6		रैनी वेल	के डी पी यादव जी	9911144579	12	18
7	गांधी नगर	लोहे वाला पुल	विवेक जी	9876313156	8	45
8	शास्त्री नगर	फ्लाई ओवर	रोहित जी	9899781936	5	3
9	बदरपुर	मदनपुर खादर	धिरेंदर राजपूत जी	9958614366	6	4
10		विशकर्मा कॉलोनी	इन्देर्नील जी	9818750467	4	6
11	मुखर्जी नगर	मजनु का टीला	अंकुर जी	7982166195	3	2
12		यमुना बाजार	कोमल जी	9212357767	2	3
13		चंद्रावल	महेश जी	9868470552	3	4
14		ISBT फ्लाईओवर-L	मधु जी	9311050342	4	5
15		ISBT फ्लाईओवर-R	बिलाल जी	7042411464	4	7
16		राजघाट	खुशबू जी	9971939740	2	12
17		विजयघाट	गौरव जी	8287457288	1	9
18		विजय घाट 2	कमल जी	8130655061	3	4
					108	**206**

स्वास्थ्य सेवा							
दिनांक	सहयोगो संस्था	कुल इलाके	महिलाएं	पुरुष	बच्चे	कुल मरीज	डॉ की संख्या
13/07/2023	NMO	चार कैंप	46	75	12	133	8
14/07/2023	NMO	छ: कैंप	315	160	95	570	12
15/07/2023	सेवा इंटरनेशनल	छ: कैंप	235	241	95	571	12
16/07/2023	NMO	दस कैंप	531	291	193	1015	20
	SVHM						
	RHS	दो केंप	18	18	22	58	5
17/07/2023	NMO	तीन कैंप	145	70	20	235	7
	RHS	दो केंप	26	18	22	66	4
	SVHM						
18/7/2023	सेवा इंटरनेशनल	छ: कैंप	181	192	100	473	12
	RHS	दो केंप	32	18	20	70	4
19/7/2023	NMO						
	इन्द्रप्रस्थ	आठ कैंप	82	94	35	211	12
	यमुना बाज़ार						
	RHS	तीन कैंप	42	30	27	99	7
20/7/2023	NMO	छ: कैंप	102	188	294	584	10
	राष्ट्रीय होम्योपैथी संघ		42	66	65	173	9
21/7/2023	NMO	दो कैंप	95	75	57	227	7
	आरएचएस होम्योपैथी		19	28	31	78	4
22/7/2023	NMO	छ: कैंप	219	184	122	525	6
	RHS होम्योपैथी	तीन कैंप	32	36	24	92	6
23/7/2023	NMO	सात कैंप	226	232	235	593	14
	RIT NGO						
	RHS होम्योपैथी	दो कैंप	15	17	28	60	2
24/7/2023	NMO	छ: कैंप	99	123	116	338	12
	RHS होम्योपैथी	1 कैंप	9	6	20	35	2
25/7/2023	NMO	आठ कैंप	198	230	202	630	15
	RHS होमियोपैथी	1 कैंप	9	12	9	30	3
26/7/2023	NMO	दस कैंप	211	197	240	648	19
	RHS होम्योपैथी	1 कैंप	22	16	28	66	2
27/7/2023	NMO	सात कैंप	173	124	69	366	12
	RHS होम्योपैथी						
28/7/2023	NMO	छ: कैंप	144	79	47	270	10
	RHS होम्योपैथी						
29/7/2023	NMO	सात कैंप	159	146	189	324	14
	RHS होम्योपैथी	एक कैंप	5	5	7	17	2
30/7/2023	NMO	आठ कैंप	190	112	160	462	16
	RHS होम्योपैथी						
31/7/2023	NMO	आठ कैंप	146	155	117	418	17
		142	**3768**	**3238**	**2701**	**9437**	**285**

जीवनरक्षण			
क्र स	राशन	संख्या	
1	भोजन पैकेट	28375	पैकेट
2	आटा	4350	किलो
3	चना दाल	400	किलो
4	उर्द	350	किलो
5	मूंग	225	किलो
6	मसूर	175	किलो
7	राजमा	150	किलो
9	चिडवा	50	किलो
11	पाउडर दूध	75	किलो
12	दूध	4300	लीटर
13	बिस्कुट	12000	पैकेट
14	फ्रूटी	3200	पैकेट
15	मेग्गी	600	पैकेट
16	रस्क	400	पैकेट
17	पानी की बोतल	3000	लीटर
18	पानी के टेंकर	12	टेंकर
19	सरसों का तेल	400	किलो
20	नमक	400	किलो
21	मुरमुरे	25	किलो
22	बेसन	50	किलो
23	घी	20	किलो
24	मिर्च	10	किलो
25	जीरा	10	किलो
26	हल्दी	40	किलो
27	धनिया	40	किलो
28	आमचूर	35	किलो
29	दन्तकान्ति	288	पैकेट
31	चायपत्ती	50	किलो
32	चीनी	400	किलो
33	चावल	600	किलो
34	ब्रेड	5000	पैकेट

सहयोगी संस्था	
क्र स	संघठन का नाम
1	NMO
2	RHS
3	गेल
4	तिहार जेल
5	NYCA बॉक्सिंग एकेडेमी
6	रोटरी क्लब मयूर विहार
7	किचिन केयर इंद्रप्रस्थ
8	भारत विकास परिषद
9	संत ईश्वर
10	सिद्धि फाउंडेशन
11	सजग
12	स्कूल अंडर ब्रिज
13	शिव रुद्राक्ष धाम
14	रितु फाउंडेशन
15	लाइंस क्लब इन्द्रप्रस्थ
16	सेवा इंटरनेशनल
17	एहसास
18	रित रूरल फाउंडेशन
19	चाणक्य सेवा सोसाइटी
20	निरंकारी सत्संग
21	संकल्प
22	मानव मंदिर
23	दिल्ली स्कूल ऑफ़ सोशल वर्क
24	नोवा मिल्क

जीवन उपयोगी		
क्र स	सामान	संख्या
1	तिरपाल	335
2	मछर दानी	412
3	हाथ के पंखे	1000
4	चादर	230
5	मोर्टन	400
6	साबुन	500
7	साड़ी	300
8	सेनेटरी नेपकिन	1450
9	टोर्च	250

पुनर्वास हेतु सर्वेक्षण					
क्र स	**जिला**	**स्थान**	**प्रभावित परिबार**	**सर्वेक्षण हुआ**	**सहयोग उपलब्ध करवाया :-**
1	करावल नगर	सिग्नेचर ब्रिज	70	70	65
2	ब्रह्मपुरी	उस्मानपुर पुस्ता	150	100	127
3	मयुर विहार	मेट्रो स्टेशन	1200	623	1023
4	इंद्रप्रस्थ	यमुना बैंक	400	177	278
5		खेल गॉव	350	185	311
6		रैनी वेल	400	123	305
7	गांधी नगर	लोहे वाला पुल	350	267	308
8	शास्त्री नगर	फ्लाई ओवर	200	137	97
9	बदरपुर	मदनपुर खादर	500	178	379
10		विशकर्मा कॉलोनी	2500	430	2173
11	मुखर्जी नगर	मजनु का टीला	100	80	78
12		यमुना बाजार	500		
13		चंद्रावल	400	155	128
14		ISBT फ्लाईओवर-L	300	188	145
15		ISBT फ्लाईओवर-R	350	192	129
16		राजघाट	200	146	85
17		विजयघाट	300	143	90
18		विजय घाट 2	300	198	127
			8570	**3392**	**5848**
	अनुमानित परिवार	**8570**			
	सर्वेक्षण	**3392**			
	सहयोग पहुचाया	**5848**			

सर्वरक्षा का पर्व : रक्षाबंधन

■ निशान्त

प्राचीनकाल में एक बार बारह वर्षों तक देवासुर-संग्राम होता रहा, जिसमें देवताओं की हार पर हार हो रही थी। दु:खी और पराजित इन्द्र गुरु बृहस्पति के पास गये। वहां इन्द्रपत्नी शचि भी थीं। इन्द्र की व्यथा जानकर इन्द्राणी ने कहा- कल श्रावण शुक्ल पूर्णिमा है। मैं विधानपूर्वक रक्षासूत्र तैयार करूंगी। उसे आप स्वस्तिवाचन पूर्वक ब्राह्मणों से बंधवा लीजिएगा। आप अवश्य ही विजयी होंगे। दूसरे दिन इन्द्र ने इन्द्राणी द्वारा बनाए रक्षाविधान का स्वस्तिवाचन पूर्वक बृहस्पति से रक्षाबंधन कराया, जिसके प्रभाव से इन्द्र सहित देवताओं की विजय हुई। तभी से यह रक्षाबंधन पर्व ब्राह्मणों के माध्यम से मनाया जाने लगा। इस दिन बहनें भी भाइयों की कलाई में रक्षासूत्र बांधती हैं और उनके सुखद जीवन की कामना करती हैं।

भाई के प्रेम को प्रगाढ़ बनाता रक्षाबंधन का पर्व

भाई व बहन के अनकहे स्नेह-शपथ का परिचायक है। रक्षाबंधन श्रावण पूर्णिमा के दिन प्रतिवर्ष अगस्त के महीने में मनाया जाता है। इसी दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी का कोमल धागा बांधती हैं। यह धागा उनके बीच प्रेम व स्नेह का प्रतीक होता है। यही धागा भाई को प्रतिबद्ध करता है कि वह अपनी बहन की हर कठिनाई व कष्ट से रक्षा करेगा।

बहिनों की रक्षा का महोत्सव

रक्षाबंधन बहिन और भाई के स्नेह का त्योहार है। पूरा दिन उल्लास व हर्षपूर्ण होता है। घरों की सफाई होती है तथा बहनें सुबह स्नानादि के पश्चात् अधीरता से अपने भाई की प्रतीक्षा करती हैं कि वे आएं, ताकि उन्हें राखी का पवित्र धागा बांधा जा सके। जब तक भाई को राखी न बांधे तब तक बहनें व्रत रखती हैं। राखी बांधने के बाद ही खाना खाती हैं। राखी बंधवा कर भाई

रक्षाबंधन की अमर कथाएं

ऐसा कहा जाता है कि ग्रीक नरेश सिकंदर की पत्नी ने अपने पति की रक्षा के लिए उसके शत्रु पुरुराज को राखी बांधी थी। कथानुसार युद्ध के समय पुरु ने जैसे ही सिकंदर पर प्राणघातक आक्रमण किया, उसे उसकी कलाई पर बंधी रक्षा दिखाई दी, जिसके कारण उसने सिकन्दर को अभय प्रदान किया और युद्ध में अनेक बार सिकन्दर को प्राणदान दिया।

एक अन्य मर्मस्पर्शी कथानुसार, राजपूत राजकुमारी कर्मवती ने मुगल सम्राट हुमायूं को गुजरात के सुन्तान द्वारा हो रहे आक्रमण से रक्षा के लिए राखी भेजी थी। यद्यपि हुमायूं किसी अन्य कार्य में व्यस्त था, वह शीघ्र से बहन की रक्षा करने चल पड़ा। परंतु जब वह पहुंचा, तो उसे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि राजकुमारी के राज्य को हड़प लिया गया था तथा अपने सम्मान की रक्षा हेतु रानी कर्मवती ने 'जौहर' कर लिया था।

अपनी बहनों को अनेक प्रकार की भेंट प्रदान करते हैं। रक्षाबंधन के दिन देश में कई स्थानों पर ब्राह्मण, पुरोहित भी अपने यजमान की समृद्धि हेतु उन्हें रक्षा बांधते हैं, जिसकी उन्हें दक्षिणा भी मिलती है। रक्षा बांधते समय ब्राह्मण यह मंत्र पढ़ता जाता है–

येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि, रक्षे! मा चल! मां चल!!

अर्थः जिस प्रकार के उद्देश्य की पूर्ति हेतु दानव-सम्राट महाबली, रक्षा-सूत्र से बांधा गया था (रक्षा सूत्र के प्रभाव से वह वामन भगवान को अपना सर्वस्व दान करते समय विचलित नहीं हुआ), उसी प्रकार हे रक्षा सूत्र! आज मैं तुम्हें बांधता हूं। तू भी अपने उद्देश्य से विचलित न हो, दृढ़ बना रहे।

राखी का धार्मिक महत्व

रक्षाबंधन का पर्व प्रत्येक भारतीय घर में उल्लासपूर्ण वातावरण से प्रारंभ होता है। राखी, पर्व के दिन या एक दिन पूर्व खरीदी जाती है। पारंपरिक भोजन व व्यंजन प्रातः ही बनाए जाते हैं। प्रातः शीघ्र उठकर बहनें स्नान के पश्चात् भाइयों को तिलक लगाती हैं तथा उसकी दाहिनी कलाई पर राखी बांधती हैं। इसके पश्चात् भाइयों को कुछ मीठा खिलाया जाता है। भाई अपनी बहन को भेंट देता है। बहन अपने भाइयों को राखी बांधते समय सौ-सौ मनौतियां मनाती हैं। महारानी कर्मवती की कथा इसके लिए अत्यंत प्रसिद्ध है, जिसने हुमायूं को राखी भेजकर रक्षा के लिए आमंत्रित किया था। इतिहास में इस पर्व से जुड़ी अनेक गाथाएं मिलती हैं।

महाराष्ट्र में नारियल पूजन

मुम्बई में रक्षाबंधन पर्व को नारली (नारियल) पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। जल के देवता वरुण को प्रसन्न करने के लिए समुद्र को (नारियल) अर्पित किए जाते हैं। वरुणदेव ही पूजा के मुख्य देवता होते हैं। नारियल की 'तीन आंखें' होती हैं। इस बारे में ऐसा विश्वास किया जाता है कि ये भगवान शिव के त्रिनेत्रों की प्रतीक हैं, इसीलिए इस पर्व पर नारियल या गोले के पूजन की विशेष धार्मिक महत्ता है। घर में बहनें भाइयों को राखी बांधती हैं और उसका पूजन करके, मिठाई खिलाकर उनसे उपहार भी प्राप्त करती हैं। इसी दिन महाराष्ट्रियों में कृष्ण यजुर्वेदी शाखा की श्रावणी का भी विधान है। पुरुष किसी बड़े घर में विभिन्न मंत्रोच्चार के साथ भगवान् का पूजन हवन करते हैं। फिर नये यज्ञोपवीत को प्रतिष्ठित अभिमंत्रित करके पहनते हैं।

दक्षिण भारत में अवनि अवित्तम

इस त्योहार को दक्षिण भारत में अवनि अवित्तम के रूप में मनाया जाता है। इस दिन ब्राह्मण नया पवित्र यज्ञोपवीत धारण करते हैं तथा प्राचीन ऋषियों को जल अर्पित करते हैं। ❐

विश्वास का बंधन

■ कृष्ण कुमार यादव

भारतीय संस्कृति में त्योहारों का आदिकाल से ही महत्व रहा है। हर त्योहार के साथ धार्मिक मान्यताओं, मिथकों, सामाजिक व ऐतिहासिक घटनाओं और परंपरागत विश्वासों का अद्भुत संयोग प्रदर्शित होता है। त्योहार सिर्फ एक अनुष्ठान मात्र नहीं है बल्कि इसके साथ-साथ सामाजिक समरसता, संस्कृति एवं सभ्यताओं की खोज तथा अपने अतीत से जुड़े रहने का सुखद अहसास भी जुड़ा होता है। त्योहारों को मनाने के तरीके अलग हो सकते हैं, लेकिन उद्देश्य अंततः एक ही होता है। यहां तक कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी अपनी बात लोगों तक पहुंचाने के लिए त्योहारों व मेलों का एक मंच के रूप में प्रयोग होता था।

रक्षाबंधन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का एक प्रमुख त्योहार है जो श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहन अपनी रक्षा के लिए भाई को राखी बांधती है। भारतीय परंपरा में विश्वास का बंधन ही मूल है और रक्षाबंधन इसी विश्वास का बंधन है। यह पर्व मात्र रक्षासूत्र के रूप में राखी बांध कर रक्षा का वचन ही नहीं देता बल्कि प्रेम, समर्पण, निष्ठा व संकल्प के जरिए हृदयों को बांधने का भी वचन देता है। पहले रक्षाबंधन बहन-भाई तक ही सीमित नहीं था अपितु आपत्ति आने पर अपनी रक्षा के लिए अथवा किसी की आयु और आरोग्य की वृद्धि के लिए किसी को भी रक्षासूत्र (राखी) बांध या भेजा जाता था। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि - मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव - अर्थात् सूत्र अविच्छिन्नता का प्रतीक है, क्योंकि सूत्र (धागा) बिखरे हुए मोतियों को अपने में पिरोकर एक माला के रूप में एकाकार बनाता है। माला के सूत्र की तरह रक्षा-सूत्र भी लोगों को जोड़ता है। गीता में ही कहा गया है कि जब संसार में नैतिक मूल्यों में कमी आने लगती है तब ज्योतिर्लिंगम भगवान शिव प्रजापति ब्रह्मा द्वारा धरती पर पवित्र धागे भेजते हैं जिन्हें बहनें मंगलकामना करते हुए भाइयों को बांधती हैं और भगवान शिव उन्हें नकारात्मक विचारों से दूर रखते हुए दुःख और पीड़ा से मुक्ति दिलाते हैं।

राखी का सर्वप्रथम उल्लेख पुराणों में प्राप्त होता है। असुरों के हाथ देवताओं की पराजय के पश्चात् अपनी रक्षा के निमित्त सभी देवता इन्द्र के नेतृत्व में गुरु बृहस्पति के पास पहुंचे। इन्द्र ने उनसे दुःखी होकर कहा- 'देवगुरु! अच्छा होगा कि अब मैं अपना जीवन समाप्त कर लूं' तब गुरु बृहस्पति के निर्देश पर इन्द्राणी ने श्रावण-पूर्णिमा के दिन इन्द्र सहित सभी देवताओं की कलाई पर रक्षासूत्र बांधा, अंततः इन्द्र ने युद्ध में विजय पायी। एक अन्य कथानुसार राजा बलि को दिये गये वचनानुसार भगवान विष्णु वैकुंठ छोड़कर बलि के राज्य की रक्षा के लिए चल दिये। तब देवी लक्ष्मी ने ब्राह्मणी का रूप धारण कर श्रावण पूर्णिमा के दिन राजा बलि की कलाई पर पवित्र धागा बांधा और उसके लिए मंगल कामना की। इससे प्रभावित हो राजा बलि ने देवी को अपनी बहन मानते हुए उसकी रक्षा की प्रतिज्ञा की। तत्पश्चात् देवी लक्ष्मी अपने असली रूप में प्रकट हो गयीं। उनके कहने से बलि ने भगवान इन्द्र से वैकुंठ वापस लौटने की विनती की। त्रेतायुग में रावण की बहन शूर्पनखा लक्ष्मण द्वारा नाक काटने के पश्चात् रावण के पास पहुंची और रक्त से सनी साड़ी का एक छोर फाड़कर रावण की कलाई में बांध दिया और कहा- 'भैया! जब-जब तुम अपनी कलाई को देखोगे तुम्हें अपनी बहन का अपमान याद आयेगा और मेरी नाक काटने वाले से तुम बदला ले सकोगे।'

इसी प्रकार महाभारत काल में भगवान श्रीकृष्ण के हाथ में एक बार चोट लगने से खून की धारा बहने लगी तब द्रौपदी ने तत्काल अपनी साड़ी का किनारा फाड़कर भगवान कृष्ण के घाव पर बांध दिया। कालांतर में श्रीकृष्ण ने दुःशासन द्वारा द्रौपदी के वस्त्रहरण के प्रयास को विफल कर इस रक्षासूत्र की लाज रखी। द्वापर युग में ही एक बार युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा कि मैं महाभारत के युद्ध में कैसे बचूंगा तो उन्होंने तपाक से जवाब दिया- 'राखी का धागा ही तुम्हारी रक्षा करेगा।'

ऐतिहासिक युग में भी सिकंदर व पोरस ने युद्ध से पूर्व रक्षासूत्र की अदला-बदली की थी। युद्ध के दौरान पोरस ने जब सिकंदर पर घातक प्रहार हेतु अपना हाथ उठाया तो रक्षासूत्र देखकर उसके हाथ रुक गये और वह बंदी बना लिया गया। सिकंदर ने भी पोरस के रक्षासूत्र की लाज रखते हुए और एक योद्धा की तरह व्यवहार करते हुए उसका राज्य वापस कर दिया। मुगलकाल के दौर में जब मुगल सम्राट हुमायूं चित्तौड़ पर आक्रमण करने बढ़ा तो राणा सांगा की विधवा कर्मवती ने हुमायूं को राखी भेजकर अपनी रक्षा का वचन लिया। हुमायूं ने इसे स्वीकार कर चित्तौड़ पर आक्रमण का ख्याल दिल से निकाल दिया और कालांतर में राखी की लाज निभाने के लिए चित्तौड़ की रक्षा हेतु गुजरात के बादशाह ने भी युद्ध किया। इसी प्रकार न जाने कितनी मान्यताएं रक्षाबंधन से जुड़ी हुई हैं।

लोकपरंपरा में रक्षाबंधन के दिन परिवार के पुरोहित द्वारा राजाओं और अपने यजमानों के घर जाकर सभी सदस्यों की कलाई पर मौली बांधकर तिलक लगाने की परंपरा रही है। पुरोहित द्वारा दरवाजों, खिड़कियों, पुस्तकों तथा नये-नये बर्तनों पर भी पवित्र धागा बांधा जाता है और तिलक लगाया जाता है। यही नहीं बहन भांजों द्वारा और गुरुओं द्वारा शिष्यों को रक्षासूत्र बांधने की भी परम्परा रही है। राखी ने स्वतंत्रता आंदोलन में भी प्रमुख भूमिका निभाई। कई बहनों ने अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर देश की लाज रखने का वचन लिया।

1905 में बंग-भंग आंदोलन की शुरुआत लोगों द्वारा एक-दूसरे को रक्षासूत्र बांधकर हुई। राखी से जुड़ी एक मार्मिक घटना क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद के जीवन की है। आजाद एक बार तूफानी रात में शरण लेने हेतु एक विधवा के घर पहुंचे। पहले तो उसने आजाद को डाकू समझकर शरण देने से मना कर दिया, पर यह पता चलने पर कि वह क्रांतिकारी आजाद है तो ससम्मान उन्हें घर के अंदर ले गयी। बातचीत के दौरान आजाद को पता चला कि उस विधवा को गरीबी के कारण जवान बेटी की शादी हेतु काफी परेशानियां उठानी पड़ रही हैं तो उन्होंने द्रवित होकर उससे कहा- 'मेरी गिरफ्तारी पर 5 हजार रुपये का इनाम है, तुम इसे अंग्रेजों को पकड़वा दो और उस इनाम से बेटी की शादी कर लो।' यह सुनकर विधवा रो पड़ी, बोली- 'भैया! तुम देश की आजादी हेतु अपनी जान हथेली पर रखकर चल रहे हो और न जाने कितनी बहू-बेटियों की इज्जत तुम्हारे भरोसे है। अत: मैं ऐसा हरगिज नहीं कर सकती।' यह कहते हुए उसने एक रक्षासूत्र आजाद के हाथों में बांध कर देश-सेवा का वचन लिया। सुबह जब विधवा की आंखें खुलीं तो उसने देखा कि आजाद जा चुके हैं और तकिये के नीचे 5 हजार रुपये पड़े हैं। उसके साथ एक पर्ची पर लिखा था- 'अपनी प्यारी बहन हेतु एक छोटी सी भेंट- आजाद।'

देश के विभिन्न अंचलों में राखी पर्व को भाई-बहन के त्योहार के अलावा भी भिन्न-भिन्न तरीकों से मनाया जाता है। इस दिन विशेष रूप से समुद्र देवता पर नारियल चढ़ा कर उपासना की जाती है और नारियल की तीन आंखों को शिव के तीन नेत्रों की उपमा दी जाती है। बुंदेलखंड में राखी को कजरी-पूर्णिमा या कजरी-नवमी भी कहा जाता है। इस दिन कटोरे में जौ व धान बोया जाता है तथा सात दिनों तक वह पानी देते हुए मां भगवती की वंदना की जाती है।

उत्तरांचल के चंपावत जिले के देवीधूरा में राखी पर्व पर बाराही देवी को प्रसन्न करने के लिए पाषाणकाल से ही पत्थर-युद्ध का आयोजन किया जाता रहा है जिसे स्थानीय भाषा में 'बग्वाल' कहते हैं। सबसे आश्चर्यजनक तो यह है कि इस युद्ध में आज तक कोई भी गंभीर रूप से घायल नहीं हुआ है और न ही किसी की मृत्यु हुई है। इस युद्ध में घायल होने वाले योद्धा सर्वाधिक भाग्यवान माना जाता है एवं युद्ध की समाप्ति के बाद पुरोहित पीले वस्त्र धारण कर रणक्षेत्र में आकर योद्धाओं पर पुष्प व अक्षत की वर्षा कर आशीर्वाद देते हैं। इसके बाद युद्ध बंद हो जाता है और योद्धाओं का मिलन समारोह होता है। रक्षाबंधन हमारे सामाजिक परिवेश एवं मानवीय रिश्तों का अंग है। लेकिन आज इसमें पवित्रता की जगह कुछ-कुछ आडंबर का भी समावेश हो गया है। आज जरूरत है आडंबर की बजाय इस त्योहार के पीछे छिपे हुए संस्कारों और जीवन मूल्यों की अहमियत देने की तभी व्यक्ति, परिवार समाज और राष्ट्र-सभी का कल्याण संभव होगा। ❐

(साभार : वेद अमृत)

राजनीति के आदर्श-प्रतिमान : श्रीकृष्ण

■ डॉ. कृष्णगोपाल मिश्र

'महाभारत' के 'सभापर्व' में राजनीतिक व्यक्ति (राजा) में छः गुण (व्याख्यान शक्ति, प्रगल्भता, तर्ककुशलता, नीतिगत निपुणता, अतीत की स्मृति और भविष्य के प्रति दृष्टि अर्थात दूरदर्शिता) आवश्यक माने गए हैं। जो राजा इन छः गुणों से युक्त होता है, उसकी राजनीति ही सुफलवती बनती है। महाभारतकालीन राजनीति में राजनीति की उपर्युक्त समस्त अर्हताएं श्रीकृष्ण के अतिरिक्त अन्य किसी महावीर अथवा महापुरुष में नहीं हैं। पितामह भीष्म में दृढ़ता है; वीरता है; अद्‌भुत प्रतिज्ञा-प्रियता है किन्तु नीतिगत निपुणता का अभाव है। अपनी प्रतिज्ञा के प्रति अतिरिक्त आसक्ति उन्हें असफल राजपुरुष बनाकर शरशय्या पर लिटा देती है। महात्मा विदुर में प्रगल्भता (अवसर के अनुसार कार्य करने की सामर्थ्य) का अभाव है। वे पूर्व निरूपित नीतियों के आलोक में निर्णय देने के अभ्यासी हैं। सत्यवादी युधिष्ठिर में व्याख्यान शक्ति, प्रगल्भता, तार्किकता, नीति निपुणता, और दूरदर्शिता का नितांत अभाव है। गुरु द्रोण, कृपाचार्य आदि अन्य राजपुरुष भी राजनीति की उपर्युक्त छः अर्हताओं की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। केवल श्रीकृष्ण ही उस युग के एकमात्र ऐसे राजनीतिज्ञ हैं जिनमें राजोचित छः गुणों की संव्याप्ति उनके कर्मगत धरातल पर सर्वत्र दिखाई देती है। इसीलिए वे जगद्‌गुरु हैं। अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना में सफल हैं।

'श्रीमद्‌भगवद गीता' श्री कृष्ण की व्याख्यान-शक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। कर्तव्य- पालन से विमुख मोहग्रस्त पुरुषार्थ को पुनः कर्म-पथ पर नियोजित करना कोई हंसी-खेल नहीं। यह श्रीकृष्ण की व्याख्यान-कला ही है, जो किंकर्तव्यविमूढ़ अर्जुन को पुनः कर्तव्य का बोध देकर उन्हें समरभूमि में उतारती है। उनकी इसी व्याख्यान-शक्ति में उनकी तार्किकता के भी दर्शन होते हैं।

नीति-निपुणता श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण पक्ष है। वे किसी पूर्वनिश्चित बंधी-बंधाई नीति का अनुसरण नहीं करते बल्कि लोककल्याण की दृष्टि से अपना नीति-पथ स्वयं निर्मित करते हैं। उनके इस क्रांतिकारी रूप का दर्शन उनके प्रारंभिक जीवन में ही होने लगता है। गोकुल के माखन की मथुरा में आपूर्ति

रोकना, इंद्र की पारंपरिक पूजा के स्थान पर प्राकृतिक वरदान रूप गोवर्धन पर्वत की पूजा कराना आदि कार्य उनकी नीति-निपुणता के परिचायक हैं। जब राजा विराट की सभा में हुए निर्णय के अनुसार वे पांडवों के राजदूत बनकर हस्तिनापुर आते हैं तब दुर्योधन उन्हें राज्य अतिथि बनाकर अपनी ओर कर लेना चाहता है किंतु वे उसका आतिथ्य अस्वीकार कर विदुर की कुटिया में साधारण अन्न ग्रहण करते हैं। राजनीतिक जीवन से जुड़े व्यक्ति की यह नीति-निपुणता उसकी स्वतंत्रता और स्वायत्तता के संरक्षण का उत्तम उपकरण बनती है।

भूतकाल की स्मृति और भविष्य पर दृष्टि रखने में कृष्ण अद्वितीय हैं। अत्याचारी सत्ता अपने हितों के संरक्षण और स्थायित्व के लिए किस सीमा तक पतित हो सकती है; निर्दोष प्रतिपक्ष को कहाँ तक प्रताड़ित कर सकती है - इसका व्यावहारिक ज्ञान कंस के अत्याचारों की अतीतकालीन स्मृति के रूप में कृष्ण के मन पटल पर भलीभांति अंकित है। इसीलिए पांडवों के साथ किए गए कौरवों के अत्याचारों और अन्यायों पर उन्हें आश्चर्य नहीं होता। अतीत की यह कड़वी तीखी स्मृतियां उन्हें यह भी सिखाती हैं कि अत्याचारी सत्ता किसी भी सत्याग्रह को नहीं मानती। उसका अहंकार सहनशीलता से नहीं पिघलता; वह विनम्रता को कायरता समझती है और उसका उपहास करती है। इसलिए श्रीकृष्ण आततायी के हृदय-परिवर्तन की किसी भी कोमल-कल्पना से भ्रमित नहीं होते और उसका समूल नाश करने के लिए सतत सन्नद्ध मिलते हैं। वे जानते हैं कि अतीत के जीर्णशीर्ण खंडेरों पर भविष्य के सौधशिखरों की नींव नहीं रखी जा सकती। उन्हें ढहाये बिना, भूमि को समतल किए बिना नये निर्माण का स्वप्न साकार नहीं किया जा सकता। पुराने भ्रान्त-सिद्धांतों के संकेत नए सृजन-पथ के निर्देश नहीं बन सकते, अत: उनका परिहार-निवारण अपरिहार्य है। भविष्य की यही भ्रमरहित दूरदृष्टि उनसे समस्त कौरव पक्ष सहित भीष्म-द्रोण जैसे सांस्कृतिक स्तम्भों का भी ध्वंस कराती है। नए निर्माण के पथ में आने वाले प्रत्येक अवरोध को, चाहे वह कितना भी प्रतिष्ठित क्यों न हो; हटाना ही होगा। यही श्रीकृष्ण की राजनीति का मूलमंत्र है। कंस से लेकर जरासन्ध और दुर्योधन से लेकर कर्ण-भीष्म तक समस्त राजपुरुषों को धराशायी करने-कराने में कृष्ण कहीं भी ममता और मोह से ग्रस्त नहीं हुए हैं। इसीलिए सफल हैं।

पुराने भ्रान्त-सिद्धांतों के संकेत नए सृजन-पथ के निर्देश नहीं बन सकते, अत: उनका परिहार-निवारण अपरिहार्य है। भविष्य की यही भ्रमरहित दूरदृष्टि उनसे समस्त कौरव पक्ष सहित भीष्म-द्रोण जैसे सांस्कृतिक स्तम्भों का भी ध्वंस कराती है। नए निर्माण के पथ में आने वाले प्रत्येक अवरोध को, चाहे वह कितना भी प्रतिष्ठित क्यों न हो; हटाना ही होगा।

प्रगल्भता अर्थात प्रत्युत्पन्नमतित्व श्रीकृष्ण की सर्वाधिक प्रखर शक्ति है। गोकुल में कंस द्वारा प्रेषित संहारक आसुरी शक्तियों के विनाश में उनकी प्रगल्भता का महान योगदान है। महाभारत का युद्ध वे बिना शस्त्र उठाए प्रगल्भता के बल पर ही जिता देते हैं। इंद्र द्वारा कर्ण को प्रदत्त महासंहारक एकघ्नी का घटोत्कच पर प्रहार कराना, धरती में धंसे रथ-चक्र को निकालने में व्यस्त कर्ण का बध करने के लिए अर्जुन को प्रेरित करना; गदायुद्धरत दुर्योधन की जंघा पर प्रहार हेतु भीम को उनकी प्रतिज्ञा संकेत द्वारा याद दिलाना आदि अनेक महत्वपूर्ण कार्य श्रीकृष्ण की प्रगल्भता से ही संभव हुए हैं। इसीलिए श्रीकृष्ण राजनीति के आदर्श प्रतिमान हैं।

महाभारत में वर्णित राजनेता के उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त तीन अन्य महत्वपूर्ण गुण- निश्चिन्तता, निर्भीकता और निष्कामता भी श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व की अन्यतम उपलब्धियाँ हैं। श्रीकृष्ण की निश्चिन्तता का आधार उनका आत्मबल जनित आत्मविश्वास है। उन्हें अपनी बलिष्ठ देह और समस्या-समाधान विधायिनी बुद्धि पर विश्वास है। वे अकारण चिन्ता नहीं करते। महाभारत के महाविनाश का उन्हें पूर्ण अनुमान है किन्तु वे मानवता विरोधी मूल्यों

के संपोषक घृतराष्ट्र-पुत्रों और उनके समर्थकों के संहार की चिन्ता नहीं करते और अर्जुन को भी उस व्यर्थ चिन्ताजनित मोह से मुक्त कर व्यापक लोकहित का पथ-प्रशस्त करते हैं।

निर्भीकता कृष्ण-चरित्र की अप्रतिम विशेषता है। गोकुल की माटी में; ग्रामजीवन और गोप-संस्कृति की छाया में पले-बढ़े कृष्ण एक ओर प्राकृतिक आपदाओं से जूझते हैं तो दूसरी ओर कंस-प्रेरित दानवों से निपटते हुए उत्तरोत्तर निर्भय होते जाते हैं। उन्हें न विषैले कालिया नाग से भय लगता है और न ही महाबलशाली कंस उन्हें भयभीत कर पाता है। उसके छल भरे निमंत्रण पर वे निर्भय होकर, निशस्त्र रहकर मथुरा प्रस्थान कर जाते हैं और उसके सहायकों सहित उसका वध कर देते हैं। उनकी यह निर्भयता कौरव राज्यसभा में उस समय भी प्रकट होती है जब दूत रूप में पांडवों का शांति-संदेश लाने पर दुर्योधन उन्हें बंदी बनाने का आदेश देता है। कंस का बध करते समय वे उसके श्वसुर और सहायक महाबली जरासन्ध के आक्रमण की चिन्ता नहीं करते और निर्भय होकर निश्चिन्त भाव से मथुरा को कंस के आतंक से मुक्ति दिलाते हैं। भीरूता राजनीतिक जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है। भीरु राजा अथवा भीरू नेता अपनी प्रजा अथवा जनता की रक्षा कभी नहीं कर सकता। अत: वीरता और निर्भीकता राजनीतिक-जीवन के मूल्यवान आभरण हैं। श्रीकृष्ण का राजनीतिज्ञ रूप इन आभरणों से सुसज्जित होकर अपने युग की विकृत-राजनीति को पग-पग पर परिष्कृत करता है।

राजनीति से जुड़े लोग प्राय: अपनी विलास-प्रियता के कारण आर्थिक लाभ-लोभ से ग्रस्त होकर भ्रष्ट हो जाते हैं। जो आर्थिक भ्रष्टाचार के पाप-पंक में नहीं गिरते, वे यश-लोलुपता के मकड़जाल में जकड़ कर अपने उद्देश्य से भटक जाते हैं। दुर्बलताएं राजाओं, नबाबों और नेताओं सहित अधिकांश शासक वर्ग में सहज सुलभ हैं। इनके कारण सार्वजनिक जीवन की सुख-शांति बाधित होती है। श्रीकृष्ण निष्कामता के सिद्धांत से इन विष-व्याधियों का शमन करते हैं। उन्हें न धन की अपेक्षा है और न यश की चाह। कंस को मारकर वे स्वयं को मथुरा-नरेश घोषित नहीं करते। कंस पर विजय प्राप्त करने के परिणाम स्वरूप मथुरा पर उनका अधिकार स्वयं सिद्ध हो जाता है किंतु वे उस अधिकार की डोर से नहीं बंधते। मथुरा का राजमुकुट उसके पूर्व-अधिपति महाराज उग्रसेन के मस्तक पर रखकर स्वयं पूर्ववत नंदनंदन बने रहते हैं। राज्य-सत्ता के लोभ का संवरण कर पाने में सफल ऐसी निस्पृह निष्कामता अन्यत्र दुर्लभ है।

श्रीकृष्ण के मन में कहीं यश के प्रति मोह के दर्शन नहीं होते। वे अप्रतिम वीर हैं किंतु वीरता का दंभ नहीं भरते। मथुरा पर होने वाले जरासंघ के आक्रमणों का निवारण करने के लिए; निर्दोष मथुरावासियों की सुख-शांति सुनिश्चित करने के लिए वे स्वेच्छा से मथुरा त्याग देते हैं। द्वारिका चले जाते हैं। उन्हें 'रणछोड़' कहलाना पसंद है किंतु अपने वीरत्व की प्रतिष्ठा के लिए अकारण रक्तपात करना स्वीकार नहीं। पद और यश के प्रति ऐसी निष्कामता अन्यत्र विरल है। श्रीकृष्ण के राजनीतिक जीवन की यह निष्कामता यदि आधुनिक लोकतंत्र के नेताओं को जरा भी आकर्षित और प्रभावित कर सके तो सार्वजनिक जीवन की बहुत सी जटिल समस्याओं के स्थाई समाधान संभव हैं।

राजनीति में अपेक्षित उपर्युक्त अर्हताओं की सैद्धांतिक-स्वीकृति और उस युग के सफलतम महापुरुष श्रीकृष्ण के व्यावहारिक कार्यों की अनुकरणीय प्रस्तुति आज भी तथैव आचरणीय है। महाभारत केवल द्वापर युग की एक महत्वपूर्ण घटना मात्र नहीं है, यह शोषक और शोषित का सनातन संघर्ष है, अपने स्थायित्व के लिए प्रतिपक्षी को आतंकित-आहत करने का सत्ता द्वारा किया जाने वाला शाश्वत अत्याचार है और प्रतिपक्ष का सतत विद्रोह है। इसी प्रकार श्रीकृष्ण भी सार्वजनिक जीवन में असत्य के निवारण और सत्य के संस्थापन का चिर-प्रतीक हैं। हमारे आज के राजनेताओं को भी श्रीकृष्ण से प्रेरणा लेकर कूटप्रयत्नों द्वारा संस्थापित रूढ़ियों और कुनीतियों का परिहार कर स्वस्थ-सुखी समाज की संकल्पना का नया द्वार अनावृत करना चाहिए। 'मैं' और 'मेरे' की संकीर्ण परिधि से निकल कर ही राजनीतिक-जीवन में सृजन-पथ की सफल यात्रा संभव है। ❐

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भगवान श्रीकृष्ण

■ डॉ. रामप्रकाश शर्मा

धानि-धानि तू माता देवकी अर्थात् भगवान कृष्ण की माता देवकी तुम बारम्बार धन्य हो। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के महला-5 से उपरोक्त वाणी उद्धृत है। देवकी पुत्र कृष्ण के दिव्य जीवन का अद्भुत भक्ति रस की ओर प्रेरित करने वाले गुण कीर्तन का विशद् वर्णन श्री गुरु ग्रंथ साहिब के महला 3,4,5 के अन्तर्गत तथा पेज सं 1082 पर किया गया है। दर्शनशास्त्र का अद्वैतवाद सहज रूप में बड़ी मिठास भरी वाणी में चखने का सौभाग्य भी मिलेगा। उदाहरण के लिए ''आपे गोपी, आपे कान्हा।''

गुरु वाणी में भगवान के अवतारों तथा प्रसिद्ध तीर्थों का अनुसन्धान-परक वर्णन है। द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण का जन्म कंस की नगरी मथुरा की कारागाार में हुआ। राजा कंस ने अपनी प्यारी बहन देवकी और उनके पति वासुदेव को बन्दी बनाकर अपनी कारागृह में इसलिए डाल दिया, क्योंकि वह वासुदेव के 8 वें पुत्र से भयभीत था। विष्णु के अवतार भगवान कृष्ण ने अपनी लीला मथुरा-वृन्दावन में ही नहीं की, अपितु सम्पूर्ण ब्रजक्षेत्र को अपनी लीला स्थली बनाया। ब्रज की रज को अपने चरणों से पावन किया। इसी पावनी भूमि में ईश्वर की दिव्य ज्योति से आलोकित श्री गुरु नानकदेव जी महाराज ने 15 वीं शताब्दी में यात्रा के दिनों में मथुरा की मसानी बगीची में प्रवास किया था। वह स्थान आज गुरुद्वारा नानक बगीची के नाम से प्रसिद्ध है। गुरु नानक देव भक्ति के साक्षात् विग्रह स्वरूप हैं। वे भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अगाध भक्ति से अभिभूत हैं। भगवान श्रीकृष्ण की क्रीड़ास्थली वृन्दावन के सन्दर्भ में गुरुवाणी में लिखते हैं, ''धानि-धानि बन खंड बिंद्राबना।। जह खेलै स्री नाराइना।'' जंगल का वह वन भाग वृन्दावन धन्य है, जहाँ श्री नारायण श्रीकृष्ण रूप में खेलते हैं। ''बेनु बजावे गोधनु चरै'' कान्हा ने बांसुरी बजाते हुए, इसी क्षेत्र में गाय चरायी। ''आपे गोपी आपे काना'' भगवान श्रीकृष्ण स्वयं ही गोपी हैं, और स्वयं ही कान्हा हैं, यह तो उनकी लीला है। हमें अज्ञानतावश गोपी और कान्हा अलग-अलग दिखाई देते हैं। सत्यता तो यह है कि जो कान्हा हैं वही गोपी हैं, जो गोपी हैं, वही कान्हा हैं। सभी के अन्दर वह एक ही परमात्मा विद्यमान है। एकं सद् विप्रा: बहुधा वदन्ति इस उपनिषद् वाक्य की गुरुवाणी में मृदुल अभिव्यक्ति है।

भगवान श्रीकृष्ण के सहस्रों नामों में से अधिकांश नामों का उल्लेख गुरुवाणी में है। ''मधुसूदन दामोदर सुआमी'' मधु दैत्य को मारने वाले, दामोदर- जिनके पेट पर रस्सी बांधकर मां यशोदा ने घर में बंधक बनाया था, ऐसे लीलाधारी मेरे स्वामी हैं। ''रिखी केस गोवरधन ध ारी मुरली मनोहर हरि गंगा।'' इन्द्रियों को जीतने वाले, गोवर्धान पर्वत को धारण करने वाले, मुरली बजाने वाले, सबके मन को अपनी ओर हरने वाले, सबके दु:खों को दूर करने वाले, सबको पावन करने वाले, ऐसे कल्याण ाकारी कृष्ण अर्थात् सबको अपनी ओर आकर्षित करने वाले वही हम सब के ''मोहन माधव क्रिस्न मुरारे'' हैं। ''गोविंदु गुणी निधाानु है अंत न पाइआ जाइ'' गोविन्द परमात्मा गुणों के भंडार हैं। उसका अन्त नहीं पाया जा सकता है। ''हउ गुण गोविंद, हरिनामु धियाई'' हरि प्रभु अगम हैं, वही अगोचर हैं और वही सबके स्वामी हैं। ''कीनी दइआ गोपाल गुसाई। गुर के चरन बसे मन माही।'' जिन पर गोपाल गोसाईं ने दया की, उनके हृदय पवित्र हो जाते हैं। ऐस हृदयों में गुरु के चरण निवास करने लगते हैं।

''मधुसूदन मेरे मन तन प्राना'' मधुसूदन परमेश्वर ही मेरे मन, तन और प्राण स्वरूप हैं। ''लाल गोपाल दइआल रंगीले, गहिर गंभीर बेअंत गोविंदे'' हे लाल गोपाल! हे दयालु! प्रसन्नता बरसाने वाले हे गोविन्द! असीम तू अत्यन्त गम्भीर है। ''भए क्रिपाल गोविंद गोसाई'' हे गोविन्द गोसाई! आप सब पर सदैव कृपालु हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाराहमासा एक प्रकरण है जिसमें भगवान के अलग-अलग नामों से महीनों के क्रम से आराधना की गई है। इन नामो में अनेक नाम देवकी पुत्र वासुदेव के हैं। ❐

प्यार में दरार

■ आचार्य मायाराम पतंग

मनीष, मनीषा और महेश रंजन गुप्ता जी को तीन संतान हैं। बच्चों की माता रागिनी एक सुलझी हुई गृहिणी। जी हाँ एक सामान्य मुनीम के वेतन में बच्चों का पालन-पोषण करना तथा पढ़ाना-लिखाना कोई आसान काम नहीं है। मनीष ने तो दसवीं करके आई.टी.आई. से मैकेनिक का कोर्स कर लिया। बड़ा था तो मैकेनिक की नौकरी करके कुछ कमाने लगा। अपने पिता को आर्थिक सहयोग करना वह अपना दायित्व मानने लगा। बारहवीं पास होते ही मनीषा ने कम्प्यूटर का बेसिक कोर्स सेवा भारती केन्द्र, खिचड़ीपुर से कर लिया। साथ ही हिन्दी टाइपिंग का अभ्यास भी करती रही। महेश पढ़ाई में प्रवीण था। वह स्नातक बनने के पश्चात् किसी फर्म के साथ जुड़ गया। फर्म के साथ ही वह इंग्लैंड चला गया। गुप्ता जी के भाग्य खुल गए।

सुनील और मनीषा के प्यार में दरार पड़ चुकी थी। सवेरे मनीष और मीना के साथ मनीषा को मजबूरन जाना पड़ा। वह अपना बच्चा लेकर अपने पीहर चली आई। उसने निश्चय किया कि वह मेहनत करेगी, काम करेगी तथा अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा देगी। माता-पिता के पास अपने छोटे से मकान में रहने लगी। लैपटाप उसके विदेश में नौकरी कर रहे भाई ने भेज दिया था। उसी पर टाइप करके मनीषा अपना खर्च निकालने लगी।

रंजन गुप्ता जी सोचने लगे किराए पर रहते हुए ही जीवन गुजार दिया। अब हमें अपना मकान बनाना चाहिए। पत्नी रागिनी से मन की बात कही। रागिनी बोली- ''मेरी मानो तो एक बात कहूँ'' गुप्ता जी ने कहा- ''तुम्हारी ही तो मानकर जीवन गुजार दिया। कहो, क्या कहना है?'' रागिनी बोली- ''सच तो यह है कि मैं ही सदा आपकी मानती रही हूँ। आपने मेरी राय को कभी महत्त्व नहीं दिया, सदा ही अपनी चलाई। पर अब तो मेरी बात माननी पड़ेगी।'' गुप्ता जी ने कहा-हाँ महारानी अब बता भी दो क्या चहती हो?'' रागिनी बोली- ''आपको बेटों की कमाई दीखती है। दिल्ली में अपना मकान बनाने की इच्छा जागृत हो गई।'' रंजन गुप्ता ने टोका- ''साफ़-साफ़ कहो, पहेलियाँ क्यों बुझा रही हो? इतनी भूमिका बनाने की क्या आवश्यकता है?''

रागिनी बोली-साफ़ ही तो कह रही हूँ, आपको बेटे तो दीखते है, बेटी नहीं दिखाई देती। मकान बनाने से पहले इसके हाथ पीले करना ज्यादा जरुरी है।'' रंजन का रंग फीका पड़ गया। ''सचमुच तुम्हारी बात लाख टके की है। पर यदि मकान पहले बन जाये तो रिश्ता भी अच्छा मिल जाएगा।'' रागिनी ने कहा- ''जरा सोचो मकान के बनाने में बहुत खर्चा होता है। बेटी अब ब्याह लायक हो चुकी है। कोई ऊँच-नीच हो गई तो पछताते रह जाओगे।''

रंजन गुप्ता बोले- ''ठीक है, बेटो से भी विचार-विर्मश कर लेते हैं।'' रागिनी ने कहा-उनकी सलाह ना लो आप स्वयं ठंडे दिमाग से विचार कर के निर्णय लो फिर पुत्रों को बताओ। सलाह माँगोगे तो माननी पड़ेंगी। दोनों की राय अलग-अलग भी हो सकती है।'' ''चलो ठीक है, मैं अपने हित चिन्तक मित्रों से सलाह देता हूँ तथा स्वयं भी गहराई से चिन्तन करके बताता हूँ। कोई भी निर्णय जल्दबाजी में नहीं लेना चाहिए। जो निर्णय विचार पूर्वक लिया जाता है, वही उचित होता है फिर पछतावा नहीं होता।''

अन्तिम निर्णय यही हुआ कि रागिनी की शादी पहले करेंगें। यदि मकान अच्छा बन गया तो लड़के वालों की भी दहेज की अपेक्षा बढ़ जाती है। फिर लड़का खोजने का अभियान चल पड़ा। कभी कोई रिश्तेदार या मित्र लड़का बताता तो कभी अपने जिले के लोग जानकारी देते। बहुत सोच समझकर यह निश्चय किया गया कि दिल्ली से बाहर का रिश्ता नहीं करेंगे। दूर की रिश्तेदारी

कौन निभाएगा। यह भी सोचा गया कि अपने से बहुत अमीर लोगों से भी रिश्ता नहीं जोड़ना है। ऐसे में बेटी सदा हीनभाव से ग्रस्त रहेगी। खोज बीन चलती रही।

रिश्ते तो कई आए। लड़के देखे, परिवार देखे। कई समझ में आए तो उनकी ओर से इंकार हो गया। किसी की समझ में लड़की नहीं आई तो किसी की मांग ज्यादा थी। आखिर एक लड़का समझ में आ गया। स्वस्थ था, सुन्दर था परन्तु नौकरी पर लगा नहीं था। मनीषा भी कोई सुन्दरी नहीं थी। सामान्य कद, सामान्य पतला-दुबला शरीर, सांवला रंग पर नैन नक्श आकर्षक। प्रीत विहार के वैष्णव माता मन्दिर में देखने-दिखाने का कार्यक्रम बना। माता के आशीर्वाद से काम बन गया। बसन्त पंचमी को विवाह निश्चित हो गया।

वर सुनील का परिवार बलवीर नगर में रहता था। स्वस्थ और स्वच्छ परिवार सब प्रकार सुखी आनन्द। विवाह सम्पन्न हुआ। वर पक्ष के ही सब मेहमान थे। कन्या पक्ष के ना के बराबर। लेन-देन पर भी कोई चूँ-चपड़ नहीं हुई। सब शान्ति से सम्पन्न हो गया। मनीषा ससुराल में प्रसन्न थी।

एक वर्ष पश्चात् ही उसने पुत्र रत्न को जन्म दिया। बड़ा समारोह मनाया गया। मित्र, रिश्तेदार और पड़ौसियों की दावत हुई। मनीष तो गया। यथा संभव कुछ सामान भी ले गया परन्तु सुनील के स्तर के अनुकूल नहीं थे। एक भाई विदेश में था, वह आया नहीं। रंजन गुप्ता गए सामान ना मिला, उन्हें लगा हमारा सम्मान नहीं हुआ।

मनीष को एक पंजाबी लड़की से प्यार हो गया। माता-पिता के मना करने पर भी उसने मीना से विवाह कर लिया। मनीष की अपनी मर्जी चलनी बन्द हो गई। जैसे मीना कहती, वैसे ही मनीष को मानना पड़ता। मीना वास्तव में ग्रेजुएट थी। मनीष ने कॉलेज का मुँह भी नहीं देखा था। मीना ने जल्दी ही उस पर इतना रौब जमा दिया कि वह मीना का गुलाम हो गया। ऐसा परिवार में नहीं चल पा रहा था। अतः एकदिन वे दोनों अलग किराए पर कमरा लेकर रहने लगे।

मनीषा के परिवार में उसके देवर की सगाई थी। निमंत्रण पीहर में भी भेजा गया। गुप्ता जी संकोच और खराब स्वास्थ्य के कारण ऐसे समारोहों में जाने से बचते थे। मनीष और मीना को ही इस अवसर पर कार्यक्रम में सम्मिलित होने का अवसर मिला। दोनों सगाई के दिन सवेरे ही पहुँच गए। सगाई तो आर्य समाज धर्मशाला में शाम को होनी थी। अतः दोनों काम-काज में हाथ बटाने लगे।

मीना इस परिवार की शान-शौकत देखकर चकित थी। उसने मनीषा को ब्यूटी-पार्लर चलने को कहा तो उसने मना कर दिया। यद्यपि वह सांवली थी परन्तु फैशन के लिए तरह-तरह से चेहरा रंगवाने का शौक नहीं था। मीना को और हैरानी हुई। कहीं अचेतन मन में डाह भी हुई। इतने अमीर परिवार में यह मजे में रह रही है और मैं इतनी सुन्दर, गोरी चिट्टी, पढ़ी-लिखी होकर भी इसके टट पूंजिए भाई के साथ गुजारा कर रही हूँ। सगाई के पश्चात शादी भी हुई। घरेलू रीति-रिवाजों में मीना लगातार सम्मिलित रही। अपने बड़बोले स्वभाव और चिकनी-चुमढ़ी बातों से उसने परिवार में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया। विशेषकर मनीषा के पति सुनील से वह खुलकर बातें करने लगी। मनीषा का फैशन ना करना, ब्यूटी पार्लर ना जाना आदि की नमक-मिर्च लगाकर व्यंग्य पूर्वक सुनील से चर्चा करके उसके मन में यह बैठा दिया कि मनीषा सुनील के योग्य है ही नहीं।

मनीषा के परिवार में उसके देवर की सगाई थी। निमंत्रण पीहर में भी भेजा गया। गुप्ता जी संकोच और खराब स्वास्थ्य के कारण ऐसे समारोहों में जाने से बचते थे। मनीष और मीना को ही इस अवसर पर कार्यक्रम में सम्मिलित होने का अवसर मिला। दोनों सगाई के दिन सवेरे ही पहुँच गए। सगाई तो आर्य समाज धर्मशाला में शाम को होनी थी। अतः दोनों काम-काज में हाथ बटाने लगे।

यह सिलसिला निरन्तर चला और आखिर मीना अपने मिशन में सफल हो गई। सुनील ने एकदिन मनीषा को अपने घर जाने को कह दिया। सुनील के माता-पिता

का भी मन बदल गया। वो भी मनीषा को छोड़ने को तैयार हो गए। मनीषा के पिता और भाई को बुलाया गया। रंजन गुप्ता जी मनीष को साथ लेकर सुनील के माता-पिता से मिलने गए। मीना भी अपने बच्चे के साथ गई। माता-पिता ने तो यह कहकर किनारा कर लिया कि सुनील जाने। वह इसे रखे तो हमें दिक्कत नहीं और छोड़ दे तो कोई एतराज नहीं।

मनीषा ने पिता जी से कहा-आप जाओ। मैं यहीं रहूंगी। जैसे भी होगा, मैं स्वयं सुलट लुंगी। पिता जी लौट गए परन्तु मीना और मनीष नहीं गए, बोले- ''जीजा जी अभी गुस्से में है। जब शान्त हो जाएँगें तो हम उन्हें मना लेंगे।'' वे दोनों बच्चे सहित वहीं रुक गए। रातभर खूब हँस-हँस कर बातें हुई परन्तु कोई समझौता नहीं हुआ। वास्तव में मीना ने आग में और घी डालने का काम किया। मनीष तो सो गया और मीना जीजा को मनाने की नहीं उकसाने का प्रयास करती रही।

सुनील और मनीषा के प्यार में दरार पड़ चुकी थी। सवेरे मनीष और मीना के साथ मनीषा को मजबूरन जाना पड़ा। वह अपना बच्चा लेकर अपने पीहर चली आई। उसने निश्चय किया कि वह मेहनत करेगी, काम करेगी तथा अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा देगी। माता-पिता के पास अपने छोटे से मकान में रहने लगी। लैपटाप उसके विदेश में नौकरी कर रहे भाई ने भेज दिया था। उसी पर टाइप करके मनीषा अपना खर्च निकालने लगी। बच्चे को अच्छे स्कूल में भर्ती करवा दिया और ससुराल को भूल सी गई। सुनील की याद भी आती तो वह ना कभी बच्चे से कहती ना अपने माँ-बाप से ही अपना दुखड़ा रोती। धार्मिक रुचि तो थी ही सेवा और सत्संग से जुड़कर अपना जीवन भगवान भरोसे बिताने लगी। उसे श्रीमद्भागवत के महान ग्रंथ को टाइप करने का पुण्य कार्य मिल गया। वैसे भागवत पढ़ने का अवसर संभवत: कभी न मिलता पर श्रीकृष्ण कृपा से टाइप करने का कार्य मिला तो अक्षरश: पढ़ने समझने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। ससुराल में ही रहती तो यह पुण्यकार्य कभी ना मिलता। ईश्वर जो करता है हमारी भलाई उसी में होती है। उसकी कृपा पर भरोसा करने की आवश्यकता है। ❐

ब्रह्मपुरी जिले में सेवाकार्य

गत दिनों सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने तीसरा पुस्ता उस्मानपुर खादर बस्ती के बाढ़ पीड़ित लोगों के बीच खाना, कपड़े, दवाइयां और अन्य वस्तुएं वितरित कीं। सेवा भारती के कार्यकर्ता 35 झोपड़ी में गए और 125 लोगों की सहायता की।

चाणक्य सोसाइटी के कार्य

चाणक्य सेवा सोसाइटी के तत्वावधान में बाढ़ की आपदा से प्रभावित लोगों के बीच शांतिवन और राजघाट क्षेत्र में चाणक्य शाखा के स्वयंसेवकों ने शांतिवन और राजघाट में सामान का वितरण किया।

यमुना खादर में दवाई और भोजन वितरण

गत दिनों मयूर विहार जिले के यमुना खादर कैम्प में बाढ़ग्रस्त परिवारों के लिए चिकित्सा शिविर लगाया गया। इसमें लोगों को दवाइयां दी गईं। इसके बाद दोपहर में घर-घर जाकर भोजन वितरण किया गया। इसमें हर कार्यकर्ता का प्रशंसनीय योगदान रहा।

श्री अरविन्द जी का राष्ट्रवाद

■ एफ.सी. भाटिया

अगस्त एक बार पुनः राष्ट्रीय जीवन में स्वाधीनता का उल्लास बिखेर रहा है। विजयी विश्व तिरंगा प्यारा का गौरव गान करते हुए जन-गण-मन प्रसन्न है। आजादी का अमृत महोत्सव नई ऊर्जा, नई उमंग एवं नया उत्साह हमारे मन में भर रहा है। 15 अगस्त को ही एक युग द्रष्ट, एक महान विचारक, राष्ट्रवाद के अग्रदूत महान ऋषि श्री अरविन्द जी का भारत की पुण्य धरा पर अवतरण हुआ।

योगीराज श्री अरविन्द जी का कहना है- ''जीवन के प्रारम्भ काल से ही जिस ईश्वरीय सत्ता ने मुझे अपने नियोजित कर्तव्य पथ पर चलने हेतु मार्ग निर्देश दिया उसी शक्ति ने मुझे 15 अगस्त को जन्म देकर मेरे कार्य पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दी है। ऐसा मैं मानता हूं।''

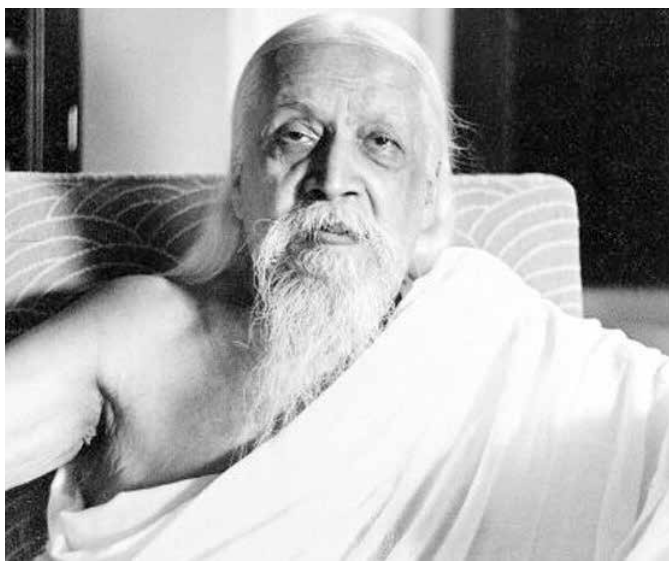

श्री मां का कहना है- ''श्री अरविन्द का जन्म एक सनातन सन्देश है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से यह पृथ्वी पर सनातन सत्ता का जन्म है।''

भारत उनके लिए एक भौगोलिक इकाई नहीं थी, अपितु एक सजीव तथा आध्यात्मिक सत्ता था। महान आत्मा की एक शक्ति था। भारत माता के प्रति अपने असीम प्रेम के कारण ही श्री अरविन्द ने राजनीति के द्वार से राष्ट्रवादी आन्दोलन में प्रवेश किया। उन्होंने कहा था- ''पूर्ण स्वराज्य का विचार राष्ट्रीय जनमानस के लिए आकर्षक है। यदि पाश्चात्य भौतिकवाद के रंग से मुक्त और शुद्ध भारतीय भावनाओं से परिपूर्ण मन से इस विचार को लोकमानस के समक्ष प्रस्तुत किया जाए तो उसका प्रभाव अजय होगा।''

अलीपुर जेल में वह इस परिणय पर पहुंचे कि भारत की प्राचीन आध्यात्मिकता के बिना उसका उत्थान असम्भव था। श्री अरविन्द ने सोई हुई आध्यात्मिक शक्तियों को जागृत किया और राष्ट्रवाद को एक धार्मिक भावना दी और आध्यात्मिक रंग दिया। श्री अरविन्द ने एक उच्चतर तथा उत्कृष्ट राष्ट्रवाद का उपदेश दिया। चूंकि भारत एक आध्यात्मिक राष्ट्र है, यहां के राष्ट्रीय जीवन की समस्याओं का समाधान भी आध्यात्मिक आन्दोलन के माध्यम से ही निकलेगा। आध्यात्मिक जागरण भारत में राष्ट्रीय जागरण की पहली और अनिवार्य शर्त है। भारत की आजादी में क्रांतिकारियों की प्रेरणा भी आध्यात्मिक ही थी। उन्होंने राष्ट्रवाद को एक धार्मिक भावना दी और आध्यात्मिक रंग दिया। श्री अरविन्द ने कहा कि राष्ट्रवाद एक धर्म है जो कि ईश्वर की ओर से आया है। राष्ट्रवाद ईश्वरीय बल से जीवित रहता है।

उनका महानतम योगदान यह है कि उन्होंने अपने देशवासियों के सम्मुख पूर्ण स्वतंत्रता का आदर्श रखा। उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन को एक नवीन भाव तथा एक नवीन दिशा प्रदान की। उन्होंने इसको एक नीचे भौतिक स्तर से ऊपर उठाकर एक उच्चतर आध्यात्मिक स्तर पर रख दिया। उन्होंने जनता के सामने भारत माता की धारणा प्रस्तुत कर के राष्ट्रवाद को एक धर्म परमात्मा के प्रति

अपने कर्तव्य का एक अंग बना कर उसे आध्यात्मिक रूप दे दिया। जन-साधारण के हृदय ममें उत्साह एवं अनुराग भर आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन बना दिया।

श्री अरविन्द के विचारों ने एक छोटी सी अवधि में भारतीय राजनीति का रूप बदल दिया। भारत का कार्य विश्व का कार्य है। भारत का काम संसार को प्रकाश और नवजीवन को स्रोत देना है। संसार को स्वाधीन भारत की आवश्यकता है। भारत का उत्थान मानवता के लिए है। श्री अरविन्द का राष्ट्रवाद हमको अन्तरराष्ट्रीयवाद तथा मानव एकता की ओर ले जाता है। भारत को अपना जीवन स्वयं जीना चाहिए न कि विदेशी राज्य का जीवन।

आज हमारे सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन को चारो ओर चरित्रहीनता, अनैतिकता एवं मूल्यों का घोर संकट घेरे हुए है। ऐसे में भारत की उन्नति एवं समृद्धि के लिए राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रकाश पर्व पर देशवासियों को आध्यात्मिकता का संदेश ग्रहण करना चाहिए। हमारी मातृभूमि को इस सन्देश की आवश्यकता है। श्री अरविन्द के यह शब्द आज भी प्रासंगिक हैं। भारत की स्वतंत्रता के लक्ष्य उसकी पूर्णता का स्मरण कराते हैं। श्री अरविन्द ने राष्ट्र जीवन की जिस व्यवस्था की चर्चा की है हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी आध्यात्मिक राष्ट्र जागरण के महान कार्य में प्रयत्नशील है। इसके लिए हम उनके आभारी हैं।

यह श्री अरविन्द जी को राष्ट्र की सच्ची श्रद्धांजलि है। 5 दिसम्बर 1950 को उन्होंने अपने भौतिक शरीर का परित्याग कर दिया। ऐसी महान आत्माएं शरीर त्यागने के बाद भी मानवता के मार्गदर्शन तथा उत्थान का कार्य करती रहती है। ❐

(साभार, राष्ट्रवाद)

जीवन का संघर्ष

एक बार एक आदमी को अपने उद्यान में टहलते हुए किसी टहनी से लटकता हुआ एक तितली का कोकून दिखाई पड़ा! अब हर रोज़ वो आदमी उसे देखने लगा और एक दिन उसने ध्यान किया कि उस कोकून में एक छोटा सा छेद बन गया है! उस दिन वो वहीं बैठ गया और घंटों उसे देखता रहा। उसने देखा कि तितली उस खोल से बाहर निकलने की बहुत कोशिश कर रही है, पर बहुत देर तक प्रयास करने के बाद भी वो उस छेद से नहीं निकल पायी और फिर वो बिलकुल शांत हो गयी मानो उसने हार मान ली हो।

इसलिए उस आदमी ने निश्चय किया कि वो उस तितली की मदद करेगा। उसने एक कैंची उठायी और कोकून की उस छेद को इतना बड़ा कर दिया कि वो तितली आसानी से बाहर निकल सके। और यही हुआ, तितली बिना किसी और संघर्ष के आसानी से बाहर निकल आई, पर उसका शरीर सूजा हुआ था, और पंख सूखे हुए थे।

वो आदमी तितली को ये सोच कर देखता रहा कि वो किसी भी वक्त अपने पंख फैला कर उड़ने लगेगी, पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। इसके उलट बेचारी तितली कभी उड़ ही नहीं पाई और उसे अपनी बाकी की ज़िन्दगी इधर-उधर घिसटते हुए बीतानी पड़ी।

वो आदमी अपनी दया और जल्दबाजी में ये नहीं समझ पाया की दरअसल कोकून से निकलने की प्रक्रिया को प्रकृति ने इतना कठिन इसलिए बनाया है ताकि ऐसा करने से तितली के शरीर में मौजूद तरल उसके पंखों में पहुंच सके और वो छेद से बाहर निकलते ही उड़ सके।

वास्तव में कभी-कभी हमारे जीवन में संघर्ष ही वो चीज होती है, जिसकी हमें सचमुच आवश्यकता होती है। यदि हम बिना किसी प्रयत्न के सब कुछ पाने लगे, तो हम भी एक अपंग के सामान हो जायेंगे। बिना परिश्रम और संघर्ष के हम कभी उतने मजबूत नहीं बन सकते, जितना हमारी क्षमता है। इसलिए जीवन में आने वाले कठिन पलों को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखिये, वो आपको कुछ ऐसा सीखा जायंगे, जिससे आप अपनी ज़िन्दगी की उड़ान को सफल बना पायेंगे!! ❐

मन ही कर्ता-मन ही भोक्ता

■ इंदिरा मोहन

राजसी ऐश्वर्य और विद्वान मंडली से सजी राजा दशरथ की सभा में वसिष्ठ एवं श्रीराम का संवाद दिन-ब-दिन रोचक होता जा रहा है। जीवन की बहुत सी गूढ़ और विचित्र बातों का उपदेश सुनने के बाद वे प्रश्न करते हैं- मृत्यु क्या है? मृत्यु के पीछे क्या होता है? सृष्टि के भीतर अनन्त सृष्टियों का रहस्य क्या है, वासना के अनुसार आगामी जीवन का बनना-इत्यादि विषयों के समाधान में वसिष्ठजी लीला-उपाख्यान को प्रस्तुत करते हैं।

चित्त, मन, वासना आदि की चर्चा के बाद श्री रामचन्द्र जी को स्पष्ट भान हो गया कि मन वासनाओं से चंचल होता है। यही मोह है और यही अविद्या है। वास्तविकता इसे छू तक नहीं गई फिर भी इसने सारे जगत को अंधा बना रखा है। जैसे अग्नि की ज्वाला जिससे उत्पन्न हुई उसी वायु से शान्त होती है, वैसे ही संकल्प से ही इसका विनाश होता है।

पृथ्वी मंडल पर किसी समय पद्म नाम का एक योग्य और सर्वगुण सम्पन्न राजा राज्य करता था। उसके अनुरूप गुणशील रानी थी जिसका नाम था- लीला। लीला अपने स्वामी में बहुत अनुरक्त थी। वह चाहती कि उसका स्वामी सदैव जीवित रहे, कभी उसकी मृत्यु न हो। शहर के प्रसिद्ध पंडितों को बुलाती, उनसे उपाय पूछती जिससे मनुष्य मृत्यु के मुख में न जाए। पंडितों ने कहा - हे देवी! ऐसा कोई भी उपाय नहीं है, जो उत्पन्न हुआ है, वह अवश्य ही नाश को प्राप्त होगा। लीला निराश होकर सरस्वती देवी की उपासना करने में लग गई। सरस्वती प्रकट हुईं, वर मांगने को कहा। लीला ने वर माँगा यदि उसके स्वामी की मृत्यु उससे पहले हो जाय तो उनका जीव उनके कमरे में ही रहे उससे बाहर न जाए। देवी ने कहा कि ऐसा ही होगा। समय आने पर राजा की मृत्यु हो गई। रानी के दुख का पारावार नहीं रहा। सहसा भविष्यवाणी हुई - घबराओ नहीं, राजा के शव को यथाविधि उस समय तक रखें जब तक वह उनके प्राण लौटने पर पुनर्जीवित न हो जाए। लीला आश्चर्यचकित रह गई, उसने देवी का ध्यान किया। वे प्रकट हो गईं। रानी पूछती है, 'मेरे स्वामी कहाँ हैं?'

इसी कमरे में हैं किन्तु दूसरी सृष्टि में हैं जो कि सूक्ष्म है और इसके भीतर ही है। एक जगत के भीतर दूसरा जगत और उसके भीतर तीसरा जगत इस प्रकार यह सिलसिला अनंत तक जारी है। एक सृष्टि दूसरी सृष्टि वालों के लिए शून्य है। यद्यपि सिद्धि द्वारा देखा जा सकता है। लीला यह सुनकर पति को उसकी वर्तमान सृष्टि में देखने को उत्सुक हो गई। देवी ने कृपास्वरूप अन्य सृष्टियों में प्रवेश की रीति बतलाई।

सरस्वती और लीला उस लोक में प्रविष्ट हुईं जहाँ पद्म अपने वासनायुक्त पूर्व कर्मों को भोग रहा था। उस सृष्टि में वह 16 वर्ष की अवस्था का राजा बना हुआ। एक विशाल राज्य पर राज कर रहा था, जबकि वर्तमान सृष्टि में मरे हुए उसे कुछ क्षण ही हुए थे। लीला भ्रमित हो गई। हे देवी! यह त्रिलोकी का प्रतिबिम्ब-वैभव बाहर भी है भीतर भी है, कौन सा नकली कौन सा असली है? मैं तो उस वर्तमान, व्यवहारी प्रत्यक्ष सृष्टि को ही असली मानती हूँ।

देवी ने समझाया कि असली से कभी नकली कृत्रिम सृष्टि नहीं हो सकती, क्योंकि कारण से कार्य न तो विपरीत होता है न भिन्न।

लीला - कार्य तोकारण से हमेशा भिन्न दिखता है जैसे मिट्टी के लोंदे में पानी नहीं ठहरता जबकि मिट्टी से बना घड़ा पानी भरने के काम आता है। देवी ने पूछा, समाधि में देखे गये तुम्हारे पति का कौन सा तत्व सृष्टि करता है? मेरे पति की स्मृति ही उसका कारण है। स्मृति तो आकाश की तरह शून्य है। अतः तुम्हारे पति की सृष्टि का अनुभव भी शून्य के सिवाय कुछ नहीं है।

उसका आश्रय चेतनात्मा ही जीवात्मा के विभिन्न भावों के अनुसार उस-उस रूप में भासता है। जिस प्रकार मनुष्य अपने बिस्तर पर पड़ा हुआ एक क्षण में सालों तक होने वाले व्यवहारों का एक अनन्त संसार क्षेत्र में अनुभव कर लेता है उसी प्रकार सब सृष्टियों का हाल है। उसमें आश्चर्य की क्या बात है? इससे अधिक आश्चर्य की तो यह बात है कि कुल एक सप्ताह भी व्यतीत नहीं हुआ कि तुम्हारे स्वामी पद्म बनने से पहले एक ब्राह्मण थे और तुम उसकी पत्नी थी।

सरस्वती देवी के साथ लीला ने वह झोपड़ी देखी जिसमें ब्राह्मण वसिष्ठ और उनकी पत्नी अरुंधती रहते थे। एक दिन वसिष्ठ ने ठाठ-बाट से सजी राजा की सवारी देखी। उनके मन में भी सुख-वैभव भोगने की इच्छा जाग उठी। उसी दिन ब्राह्मण का शरीर छूट गया। अरुंधती ने तुम्हारी तरह वर माँगा था। ब्राह्मण की पत्नी को बहुत दुख हुआ, उसकी चिता पर बैठकर वह सती हो गई। सरस्वती ने लीला से कहा यह घटना केवल सप्ताह पहले घटी थी। वह ब्राह्मण राजा पद्म के रूप में और ब्राह्मणी तुम्हारे रूप में राज्य का सुख भोगने के लिए उत्पन्न हुए थे।

अब लीला की इच्छा वर्तमान में राजा विदूरथ के रूप में जन्मे पद्म को देखने की हुई। लीला और सरस्वती महल के एक छेद से अन्तपुर में पहुँचीं, महल प्रकाशित हो उठा। दोनों को देखकर राजा चकित था। सरस्वती द्वारा राजा के सिर का स्पर्श करते ही उसे ब्राह्मण, राजापथ और विदूरथ के रूप में अपना पूर्व जन्म याद आ गया। विदूरथ के चित्त में पद्म होने की वासना उदय हो गई। विदूरथ के राज्य पर बाहर से आक्रमण होने लगे। युद्ध छिड़ा, विदूरथ मारा गया। उसका जीव जो कि लीला के कमरे में था, वहां पर सुरक्षित पड़े शव में प्रविष्ट हो गया और पद्म नामक देह जाग उठी। सरस्वती ने अपने संकल्प से आबद्ध पद्म के जीव को फूल के सुगंध की भाँति छोड़ दिया। वह उठ बैठा। प्रबुद्ध लीला ने सारी कथा सुनाई। आशीर्वाद देते हुए देवी राजमहल में ही अंतर्ध्यान हो गईं। दोनों सुख से रहने लगे।

लीला उपाख्यान का प्रयोजन-

जो कुछ हमारे जीवन में होता है सब हमारी वासनाओं के अनुसार ही होता है। जीवन-मरण, संगी-साथी, लोक-लोकान्तर सब हमारी वासनाओं के बनाए बनते हैं। वसिष्ठ जी कहते कि दृश्य रूप दोष की निवृत्ति के लिये मैंने यह आख्यान कहा है। दृश्य सत्यश नहीं है, निरन्तर बदलने वाली वस्तु सत्य नहीं होती। इस ज्ञान से यदि मन से दृश्य का परिमार्जन हो गया तो परम निवृत्ति प्राप्त हो गई। अब आप जगत की सत्यता का त्याग कीजिए। दृश्य की सत्ता है ही नहीं, जब दृश्य सत्ता है ही नहीं तब उसके शमन का क्या उपयोग? जो है ही नहीं उसके परिमार्जन के लिये प्रयास कैसा?

श्री वशिष्ठ जी पुनः कहते हैं, 'हे महामते यह जो आत्मा है यह न तो नष्ट होता है और न जाता है। इसका कदापि विनाश नहीं होता, आप उसके विनाश के भय से क्यों वृथा सन्ताप करते हैं? जैसे पक्षी का बच्चा जिसके पर जम गये हैं, वह आकाश में उड़ने के लिये अण्डे के छिलके का त्याग करता है, वैसे ही आप अहम रूप से, मिथ्या स्थित वासना का त्याग कीजिए।' 'यह शरीर मैं हूं, यह घर-धन-सम्पत्ति-बधु बांधव मेरे हैं। यह मैं और मेरे ही मन है। यदि यह मैं और मेरे की भावना न की जाय तो मन हँसिया से घास के समान कट जाता है।

जीव ही अविचारवश दुखी होता है। अविचार साधन अज्ञान से होता है। इसलिये सारे दुखों का कारण अज्ञान है। जैसे घर में घर का मालिक अनेक प्रकार की क्रियायें करता है, किन्तु जड़ घर कुछ नहीं करता, वैसे देह में जीव विविध चेष्टायें करता है, जड़ देह कुछ नहीं करता। सब सुख-दुखों में और सब कल्पनाओं में मन ही कर्ता है, मन ही भोक्ता है।

चित्त, मन, वासना आदि की चर्चा के बाद श्री रामचन्द्र जी को स्पष्ट भान हो गया कि मन वासनाओं से चंचल होता है। यही मोह है और यही अविद्या है। वास्तविकता इसे छू तक नहीं गई फिर भी इसने सारे जगत को अंधा बना रखा है। जैसे अग्नि की ज्वाला जिससे उत्पन्न हुई उसी वायु से शान्त होती है, वैसे ही संकल्प से ही इसका विनाश होता है। ❐

तन, मन से राष्ट्र को समर्पित

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह रहे वरिष्ठ प्रचारक माननीय मदनदास जी का गत 24 जुलाई को बेंगलूरु में निधन हो गया। वे काफी दिनों से अस्वस्थ थे। इस कारण उन्हें वहां के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया था, लेकिन भगवान को कुछ और ही स्वीकार था।

अपने संपर्क में आए हुए हर व्यक्ति को विचारों और आंतरिक स्नेह से प्रेरित कर किसी न किसी काम में, सामाजिक कार्य में सक्रिय करने का बहुत बड़ा कार्य मदनदास जी ने किया। उनकी दी हुई सीख पर आचरण करते हुए काम बढ़ाना, यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

-मोहनराव भागवत
सरसंघचालक

माननीय मदनदास जी मूलत: महाराष्ट्र के करमाला गांव, जिला सोलापुर के थे। शालेय शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा हेतु उन्होंने पुणे के प्रसिद्ध बी.एम.सी.सी. कॉलेज में 1959 में प्रवेश लिया। एम. कॉम के बाद आई. एल. एस. लॉ कॉलेज से स्वर्ण पदक के साथ एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त की। पुणे में पढ़ाई के दौरान ही मदनदास जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आए। इसके बाद 1964 से मुंबई में उन्होंने अभाविप का कार्य प्रारंभ किया। फिर 1966 में अभाविप मुंबई के मंत्री हुए।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कर्णावती राष्ट्रीय अधिवेशन (1968 ई.) में माननीय मदनदास जी की पूर्णकालिक कार्यकर्ता व पश्चिमांचल क्षेत्रीय संगठन मंत्री के दायित्व की घोषणा हुई। 1970 के तिरुअनंतपुरम अधिवेशन में राष्ट्रीय संगठन मंत्री का गुरुतर दायित्व आपने संभाला।

1970 से 1992 तक लगातार 22 वर्ष अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री के नाते पूर्ण देशभर में तालुका- महाविद्यालय-शहर स्तर पर संस्कारित कार्यकर्ता समूह खड़ा हो इस पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया। नींव के पत्थर के भांति कार्य करते हुए अभाविप को, नाम के अनुरूप अखिल भारतीय स्तर पर ले गए। देशभर में अनेक समर्पित कार्यकर्ता खड़े करने में आप की महती भूमिका रही। 1991 से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख तथा 1993 में संघ के सह सरकार्यवाह दायित्व का भी आपने निर्वहन किया। 25 जुलाई को स्व. मदनदास जी के पार्थिव शरीर को पुणे लाया गया। यहां मोतीबाग स्थित संघ कार्यालय में अंतिम दर्शन के लिए उनके पार्थिव शरीर को रखा गया। इसके बाद उनका अंतिम संस्कार बैकुंठ श्मशान घाट पर किया गया। उन्हें श्रद्धांजलि देने वालों में प्रमुख थे सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत, सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले, प्रांत संघचालक श्री नानासाहेब जाधव, केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. पी. नड्डा, महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस, बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी आदि। ❐

पत्तलों से बचेगा पर्यावरण

■ राममहेश मिश्र

बहुत छोटी सी बात है, लेकिन हमने उसे विस्मृत कर दिया। हमारी भोजन संस्कृति। इस भोजन संस्कृति में बैठकर खाना और उस भोजन को 'दोने-पत्तल' पर परोसने का बड़ा महत्व था। कोई भी मांगलिक कार्य हो, उस समय भोजन पंक्तियों में बिठाकर कराया जाता था। और, वो भोजन पत्तल पर परोसा जाता था। ये पत्तलें विभिन्न प्रकार की वनस्पति के पत्तों से निर्मित होती थीं।

क्या हमने कभी जानने की कोशिश की कि भोजन पत्तल पर परोसकर ही क्यों खाया जाता था? नहीं, क्योंकि हम उस महत्व को जानते होते, तो देश में कभी ये 'बुफे' जैसी खड़े होकर भोजन करने की अपसंस्कृति आ ही नहीं पाती।

जैसा कि हम जानते हैं, पत्तलें अनेक प्रकार के पेड़ों के पत्तों से बनाई जाती रही हैं। इसलिए अलग-अलग पत्तों से बनी पत्तलों में गुण भी अलग-अलग होते हैं। तो आइए! जानते हैं कि कौन से पत्तों से बनी पत्तल में भोजन करने से क्या फायदा होता है?

लकवा से पीड़ित व्यक्ति को अमलतास के पत्तों से बनी पत्तल पर भोजन करना फायदेमंद होता है। जिन लोगों को जोड़ों के दर्द की समस्या है, उन्हें करंज के पत्तों से बनी पत्तल पर भोजन करना चाहिए। जिनकी मानसिक स्थिति सही नहीं होती है, उन्हें पीपल के पत्तों से बनी पत्तल पर भोजन करना चाहिए। पलाश के पत्तों से बनी पत्तल में भोजन करने से खून साफ होता है और बवासीर के रोग में भी फायदा मिलता है। केले के पत्ते पर भोजन करना तो सबसे शुभ माना जाता है, इसमें बहुत से ऐसे तत्व होते हैं जो हमें अनेक बीमारियों से बचाते हैं। पत्तल में भोजन करने से पर्यावरण भी प्रदूषित नहीं होता, क्योंकि पत्तलें आसानी से नष्ट हो जाती हैं। पत्तलों के नष्ट होने के बाद जो खाद बनती है, वह खेती के लिए बहुत लाभदायक होती है। पत्तलें प्राकतिक रूप से सर्वथा स्वच्छ होती हैं। इसलिए इन पर भोजन करने से हमारे शरीर को किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती है।

अगर हम पत्तलों का अधिक से अधिक उपयोग करेंगे तो गांव के लोगों को रोजगार भी अधिक मिलेगा, क्योंकि पेड़ सबसे ज्यादा ग्रामीण क्षेत्रों में ही पाये जाते हैं। यदि पत्तलों की मांग बढ़ेगी तो लोग पेड़ भी ज्यादा लगायेंगे, जिससे प्रदूषण को कम करने में सहायता मिलेगी। डिस्पोजल के कारण जो हमारी मिट्टी में, नदियों में, तालाबों में प्रदूषण फैल रहा है, पत्तलों के अधिक उपयोग से वह कम हो जायेगा। जो मासूम बेजुबान जानवर रुप्लास्टिक को खाने से बीमार हो जाते हैं, या मर जाते हैं, वे भी सुरक्षित हो जायेंगे। क्योंकि, अगर कोई जानवर पत्तलों को खा भी लेता है तो इससे उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा। सबसे बड़ी बात! पत्तलें, डिस्पोजल आइटम्स से बहुत सस्ती भी होती हैं। ये बदलाव आप और हम ही ला सकते हैं। अपनी संस्कृति को अपनाने से हम छोटे नहीं हो जाएंगे, बल्कि हमें इस बात का गर्व होना चाहिए कि हमारी संस्कृति का विश्व में कोई सानी नहीं है। ❐

स्वतंत्रता दिवस

■ आचार्य मायाराम पतंग

आइए स्वतंत्रता दिवस मनाइए।
जागिए स्वयं स्वदेश को जगाइए।।

जन्मदिन मना रहे स्वतंत्र देश का।
बनी रहे स्वतंत्रता ये कामना करो।
मुकुट मणि बने यही समस्त विश्व का,
भारतीय जन कठोर साधना करो।।
साधना का पंथ है दुरूह, सत्य है,
धीर वीर बन सुदीप तो जलाइए।। आइए.....

प्रांतीय द्वेष का ज़हर जो पल रहा।
आइए इसे अभी यहीं दमन करें।
जल विवाद थल विवाद को न तूल दें,
देवकी अखण्डता सदा चयन करें।।
तुच्छ स्वार्थ भावना न छू सके हमें,
राष्ट्रभक्ति की प्रचंड धार चाहिए।। आइए.....

भेदभाव जाति-पाति का मिटा नहीं।
भाषणों से व्यर्थवायु बांधते रहे।
अमीर कब गरीब को करीब ला सके,
बीरबल की खिचड़ियां ही रांधते रहे।।
स्वतंत्रता के नाम पर चलीं कटारियां,
एकता का भाव राष्ट्र में जगाइए।। आइए.....

कदम कदममिलाके चल सके न दो कदम,
एक दूसरे की टांग खींचते रहे।
प्रेम से मिला जो खा सके न बांटकर,
नफरतों की बेल नित्य सींचते रहे।।
त्याग दो कुरीतियां आदर्श पर गहो,
मिल के मातृभूमि को नयन चढ़ाइए।।

आइए स्वतंत्रता दिवस मनाइए।
जागिए स्वयं स्वदेश को जगाइए।। ❐

देशहित में है समान नागरिक संहिता

■ प्रतिनिधि

इस समय देश में समान नागरिक संहिता की चर्चा चल रही है। कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भोपाल में भाजपा के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि अलग-अलग कानूनों से देश कैसे चल सकता है! इसके बाद तो समान नागरिक संहिता का विरोध करने वाले राजनीतिज्ञ और मजहबी नेता खुलकर मुसलमानों को भड़काने में लगे हैं। हर जुम्मे की नमाज पर इमाम तकरीर देते हैं और मुसलमानों से समान नागरिक संहिता का विरोध करने के लिए कहते हैं। यही नहीं, जमीयत उलेमा हिंद ने समान नागरिक संहिता का विरोध करने के लिए एक नया तरीका निकाला है। अनेक मस्जिदों के बाहर दीवार पर एक बार कोड चिपकाया गया है। इसे स्कैन करने से यह लिखा आता है, ''मैं प्रस्तुत करता हूं कि मैं 1300 वर्ष से भारत में व्यक्तिगत कानूनों (इस्लामी कानूनों) के अनुसार रह रहा हूं। इस लंबे इतिहास में मैंने कभी नहीं देखा कि किसी सरकार ने इसमें हस्तक्षेप किया है। इस विविध लोकतांत्रिक देश में रहना खूबसूरत है। हम अपनी विविधता और अनेकता में एकता के लिए दुनिया में जाने जाते हैं। इसलिए आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया हमारी विविध संस्कृति का सम्मान करें और हमें किसी समान नागरिक संहिता की आवश्यकता नहीं है।'' इसे ही मुसलमान मेल से विधि आयोग के पास भेज रहे हैं। बता दें कि इन दिनों विधि आयोग भारत के नागरिकों से समान नागरिक संहिता के लिए प्रतिक्रिया मांग रहा है। 28 जुलाई तक कोई भी व्यक्ति अपना मत भेज सकता है। चाहें तो आप विधि आयोग की वेबसाइट पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं या फिर डाक से भेज सकते हैं।

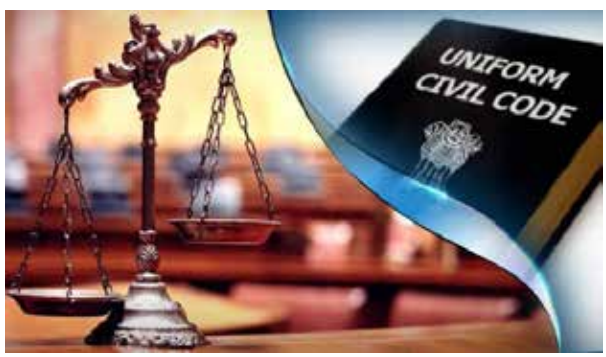

कुछ अपवादों को छोड़कर यह देखा जा रहा है कि हर मुसलमान पुरुष समान नागरिक संहिता का विरोध कर रहा है, वहीं बड़ी संख्या में मुसलमान महिलाएं समान नागरिक संहिता के पक्ष में अभियान चला रही हैं। बरेली की निदा खान ने तो प्रधानमंत्री के नाम एक पत्र भेजकर निवेदन किया है, ''समान नागरिक संहिता अवश्य बनाएं। इससे मुस्लिम महिलाओं का जीवन आसान होगा।'' इसके साथ ही निदा खान समान नागरिक संहिता के पक्ष में मुसलमान महिलाओं के बीच अभियान चला रही हैं। वहीं दूसरी ओर हर मुसलमान पुरुष का मानना है कि समान नागरिक संहिता मुसलमान विरोधी है। वास्तव में इन्हें डर है कि यदि समान नागरिक संहिता बन गई तो वे चार निकाह नहीं कर सकते हैं। यहां ध्यान देने वाली एक बात यह भी है कि मुसलमान निकाह जैसे मामलों में तो इस्लामी कानून की बात करते हैं, लेकिन किसी आपराधिक मामले में भारतीय दंड संहिता का सहारा लेते हैं। ऐसा इसलिए करते हैं कि वे कड़े इस्लामी कानून से बचना चाहते हैं। बता दें कि इस्लामी कानून के अनुसार कोई चोरी का दोषी ठहराया जाता है, तो दंड स्वरूप उसके हाथ काट दिए जाते हैं, भारतीय दंड संहिता में ऐसे अपराधी के लिए हल्की सजा होती है। इसलिए आपराधिक मामले में ये लोग भारतीय दंड संहिता को अपनाते हैं, लेकिन सांस्कृतिक विविधता के नाम पर चार निकाह पर जोर देते हैं। हलाला जैसी कुप्रथा को बनाए रखने के लिए भी ये लोग समान नागरिक संहिता का विरोध करते हैं।

जबकि भारत के हर विचारचान व्यक्ति का कहना है कि समान नागरिक संहिता सभी समाज के लिए उपयोगी और भारत को एकजुट करने वाली है। इसलिए

इसकी आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही है। यही कारण है कि भारत सरकार विधि आयोग के माध्यम से भी इस संहिता के लिए लोगों से उनकी राय मांग रही है। इससे पहले 2022 के उत्तराखंड विधानसभा चुनाव के समय वहां की भाजपा सरकार ने लोगों से वादा किया था कि यदि वह सत्ता में लौटती है तो समान नागरिक संहिता बनाएगी। यही कारण है कि सत्ता में लौटते ही राज्य सरकार ने समान नागरिक संहिता की रूपरेखा बनाने के लिए एक आयोग का गठन किया। अब उस आयोग ने अपना काम पूरा कर लिया है। वहां के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा भी है कि जल्दी ही राज्य में समान नागरिक संहिता लागू हो जाएगी। इससे पहले उत्तर प्रदेश, असम और गुजरात ने भी समान नागरिक संहिता बनाने की घोषणा की है। वहीं, गोवा में बरसों से समान नागरिक संहिता लागू है। वहां इससे किसी भी मत-पंथ के मजहबी कार्य बाधित नहीं हो रहे हैं। सब कुछ सामान्य रूप से चल रहा है। इसके बावजूद मुल्ला-मौलवी आम मुसलमानों को समान नागरिक संहिता के नाम पर भड़का रहे हैं। इससे उनके प्रति देश के लोगों में एक शंका उत्पन्न हो रही है कि क्या वे भारत का हित नहीं चाहते हैं! यदि हां, तो फिर समान नागरिक संहिता का विरोध क्यों कर रहे हैं! वहीं दूसरी ओर भाजपा अपने पूर्ववर्ती जनसंघ के काल से ही समान नागरिक संहिता की बात कर रही है। बरसों से भाजपा अपने कार्यकर्ताओं और समर्थकों से कह रही है कि वह देश में समान नागरिक संहिता लागू करेगी, जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाएगी और अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर बनवाएगी। लोगों का आशीर्वाद मिला तो भाजपा अपने इन वादों को पूरा भी कर रही है। भाजपा सरकार 2019 में अनुच्छेद 370 हट चुकी है और इन दिनों श्रीराम मंदिर बन रहा है। यानी केवल समान नागरिक संहिता बची है। कह सकते हैं कि लोगों से किए गए इस वायदे को पूरा करने के लिए ही केंद्र सरकार इस दिशा में कार्य कर रही है।

भाजपा का यह वायदा न तो मुसलमान विरोधी है और न ही संविधान विरोधी। इसलिए जो लोग इसका विरोध कर रहे हैं, उन्हें संविधान अवश्य पढ़ना चाहिए। समान नागरिक संहिता का प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 44 में है। इसके अनुसार यह कानून देश के सभी नागरिकों पर लागू होगा, भले ही वह किसी भी मजहब, पंथ, लिंग या जाति का हो। विवाह से लेकर तलाक, संपत्ति के बंटवारे, बच्चा गोद लेने जैसे मामलों में सभी नागरिकों के लिए कानून एक होगा। बता दें कि अभी हिंदू और मुसलमान के लिए विवाह के कानून अलग-अलग हैं। कोई हिंदू एक विवाह कर सकता है, जबकि कोई मुसलमान चार निकाह करता है। यदि कोई हिंदू अपनी पत्नी को तलाक दिए बिना दूसरा विवाह करता है, तो वह अपराध है, वहीं कोई मुसलमान तलाक दिए बिना चार निकाह कर सकता है। हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 के अनुसार हिंदू महिलाओं को अपने माता-पिता से संपत्ति प्राप्त करने का अधिकार पुरुषों के समान है। विवाहित और अविवाहित बेटियों के अधिकार भी समान हैं। किसी हिंदू लड़की का विवाह 18 वर्ष से पहले करना दंडनीय अपराध है, जबकि मुसलमान अपनी लड़कियों का निकाह 15 वर्ष में ही कर सकते हैं।

एक देश में दो तरह के कानून चलने से अनेक तरह की समस्याएं पैदा हो रही हैं। इसलिए सर्वोच्च न्यायालय ने भी एक नहीं, दो-दो बार कहा है कि समान नागरिक संहिता बननी चाहिए। 1985 में शाहबानो मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था, ''संसद को एक समान नागरिक संहिता की रूपरेखा तैयार करनी चाहिए, क्योंकि यह एक ऐसा साधन है, जो राष्ट्रीय सद्भाव और काननू के समक्ष समानता की सुविधा देता है।'' अक्तूबर, 2015 में भी सर्वोच्च न्यायालय ने कहा, ''विभिन्न समुदायों के लिए अलग-अलग कानून स्वीकार नहीं किया जा सकता है।'' यानी सर्वोच्च न्यायालय भी समान नागरिक संहिता के पक्ष में है। इसके बावजूद कुछ नेता अपने वोट बैंक के लिए इस कानून के विरुद्ध लोगों के अंदर गलत धारणाएं फैला रहे हैं। इसलिए समाज को ऐसे नेताओं से सावधान रहना चाहिए। ❐

श्रावण मास में अधिक मास

■ आचार्य धर्मानन्द जोशी

साम्प्राप्ते श्रावणस्यान्ते, पौर्णिमास्यां दिनोदये।
स्नानं कुर्वीत यतिमान, श्रुतिस्मृति विद्यानतः।।
प्रत्यंदं पदुपाकर्म सोत्सप विधिवत् द्विजैः।
क्रियते छन्दसातेन् पुनराप्यायनं भवते।। स्मृति

हिन्दू कैलेंडर के अनुसार प्रत्येक तीन वर्ष के बाद एक अधिक महिना आता है, जिसे अधिक मास या मल मास या पुरुषोत्तम मास कहा जाता है। हिन्दू संस्कृति में इसका विशेष महत्व होता है। महिलायें इस पूरे महीने व्रत, दान, पूजा पाठ एवम सूर्योदय से पूर्व स्नान करती हैं। अधिक मास में दान का विशेष महत्व है, कहते हैं इससे सभी प्रकार के दुःख कम होते हैं।

अधिक मास का नाम मल मास से पुरुषोत्तम मास कैसे पड़ा? दरअसल मल मास का स्वामी नहीं था, जिसके कारण उसका मजाक बनाया जाता था ऐसे में वो बहुत दुखी था उसने अपनी व्यथा नारद जी से कही। तब नारद जी उसे भगवान कृष्ण के समीप ले गये। वहाँ मल मास ने अपनी व्यथा कही। तब श्री कृष्ण ने उसे आशीर्वाद दिया कि इस मल मास का महत्व सभी मास से अधिक होगा। लोग इस पूरे मास में दान पूण्य के काम करेंगे और इसे मेरे नाम पर पुरुषोत्तम मास कहा जायेगा। इस तरह मल मास को स्वामी मिले और उसका नाम पुरुषोत्तम मास पड़ा।

अधिक मास में परमा एवम पद्मिनी एकादशी व्रत का महत्वः हिन्दू संस्कृति में ग्यारस अथवा एकादशी का बहुत महत्व होता हैं ऐसे हिन्दू कैलेंडर में प्रति वर्ष 24 एकादशी होती हैं लेकिन अधिक मास के कारण दो ग्यारस बड़ जाती हैं जिन्हें परमा एवम पद्मिनी कहते हैं। यह दोनों ग्यारस का बहुत महत्व होता हैं इसे निर्जला रख रात्रि जागरण किया जाता हैं। कहते इस दिन पूजा, स्नान एवम कथा बाचन से ही बहुत पुण्य मिलता हैं। दोनों ग्यारासों के व्रत से सभी मनोकामना पूरी होती हैं। संतान प्राप्ति, रोगों से मुक्ति, धन धान्य सभी सुख मिलते हैं। कहते हैं इन एकादशी के व्रत से मनुष्य को मोक्ष मिलता हैं जो कि बहुत कठिन बात है।

हिन्दू मान्यतानुसार एक हिरण्यकश्यप नामक राजा था जिसने तपस्या कर ब्रह्म देव से आशीर्वाद लिया था कि उसे ना कोई नर मार सके, ना जानवर। ना दिन हो, ना रात। ना ही कोई मास। ना आकाश हो, न धरती। ऐसे आशीर्वाद के कारण हिरण्यकश्यप को अभिमान हो जाता हैं और वो खुद को भगवान् से भी महान समझने लगता हैं। सभी पर अत्याचार करता हैं। तब उसका वध नरसिम्हा (आधा नर, आधा जानवर) द्वारा अधिक मास में दोपहर के समय डेलहजी पर किया जाता हैं।

कोकिला व्रत क्या हैं? जब अधिक मास आषाढ़ मास में आता है, प्रत्येक 19 वर्ष बाद ऐसा होता हैं उसे कोकिला अधिक मास कहते हैं। हिन्दू धर्म में कोकिला व्रत का बहुत महत्व होता हैं। विशेष कर कुमारी कन्या अच्छे पति के लिए कोकिला व्रत करती हैं। भगवान शिव का विवाह देवो के राजा दक्ष की बेटी सति से होता। कोकिला व्रत तब आता हैं जब अधिक मास के कारण दो आषाढ़ माह आते हैं तब श्रावण में कोकिला स्नान किया जाता हैं। इसके लिए कोकिला अर्थात नकली कोयल (चाँदी अथवा लाख की बनी होती हैं) को पीपल के पेड़ में रखकर सूर्योदय के पूर्व उठकर स्नान करके विधि विधान से पूजा की जाती हैं। आंवले के पेड़ का भी बहुत महत्व होता हैं उसकी भी पूजा की जाती हैं। विवाहित नारियाँ पति की मंगल कामना के लिए कोकिला व्रत एवम स्नान करती हैं। अविवाहित अच्छे वर की कामना हेतु कोकिला स्नान करती हैं।

मलमास का महत्वः मलमास की ख्रष्टि से जितनी इस मास की निंदा है, पुरुषोत्तम मास की ख्रष्टि से उतनी ही महिमा भी है। मान्यता है कि लोकापवाद एवं तिरस्कार से दुखी होकर इसने घोर तपस्या कर भगवान विष्णु को प्रसन्न किया था। भगवान श्री ने प्रसन्न होकर कहा कि जैसे मैं सदगुणों, कीर्ति प्रभाव, एश्वर्य, पराक्रम, भक्तों को वरदान देने के गुणों के कारण त्रिलोक में विख्यात हूं, उसी प्रकार तुम भी भूतल पर मेरे पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध होगे। अधिक मास के आने पर जो व्यक्ति श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक श्री विष्णुपूजन, गीता पाठ श्री राम

कृष्ण के नाम मंत्रों, अष्टाश्रर नारायण मंत्र, द्वादशाक्षर श्री वासुदेव मंत्र का जाप, अन्न दान आदि शुभ कर्म करता है, वह लाख गुना पुण्य फल प्राप्त कर, मृत्युपरांत गोलोक पहुंचकर श्री विष्णु का सान्निध्य प्राप्त करता है।

विधिपूर्वक षोडशोपचार से नित्य भगवान श्रीकृष्ण का पूजन करने से उत्तम लोक की प्राप्ति होती है। प्राचीन काल के ऋषि कौण्डिन्य के अनुसार,

गोवर्धनधर देवं वंदेगोपाल गोपरूपिणम।
गोकुलोत्सव मीशानं गोविंद गोपिका प्रियम।

इस मंत्र का एक मास तक 108 बार नित्य जप करने से पुरुषोत्तम भगवान की प्राप्ति होती है। हेमाद्रि के अनुसार अधिकमास आरंभ होने पर भगवान सूर्य का ऊं हां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः मंत्र से लाल पुष्पों से पूजन करके कांसे के पात्र में गेहूं-गुड़ और देसी घी फलों का दान करने से ज्ञात-अज्ञात अवस्था में किए अनेक जन्मों के पाप भस्म हो जाते हैं। अधिक मास के अंतिम दिन विविध प्रकार के दान और देसी घी से बने तैंतीस 33 पुए कांसे के पात्र में रखकर वस्त्र दक्षिणा सहित गुरु ब्राह्मणों को दान करें और भगवान विष्णु के तैंतीस नाम मंत्रों का जप करें।

अधिकमास में विष्णु पूजा का है महत्वः अधिकमास की पौराणिक कथा हिंदू धर्म में महत्वपूर्ण है। ज्योतिर्विद धार्मिक श्री बताते हैं, एक प्रमुख कथा विष्णु पुराण में प्रस्तुत की गई है, जिसे मलमास महात्म्य कहा जाता है। यह कथा अधिकमास के महत्व और आराधना की प्रेरणा देती है। एक बार पराशर ऋषि ने वेद व्यास जी से पूछा कि अधिकमास का महत्व क्या है। वेद व्यास जी ने बताया कि अधिकमास के दौरान देवता स्वर्ग में निवास करते हैं और उन्हें पूजा-अर्चना की आवश्यकता होती है। यही वजह है कि अधिकमास में विशेष पूजाएं और आराधना की जाती हैं जिससे मनुष्यों को पुण्य प्राप्त होता है और उनके पाप मिट जाते हैं। वेद व्यास जी ने कहा कि पहले काल में कश्यप ऋषि की पत्नी दिति उन्हें दरबार में लेकर गई थीं और उन्होंने देवताओं से पूछा कि अधिकमास में क्या कार्य करना चाहिए। तब देवताओं ने अधिकमास में विष्णु भगवान की पूजा की महत्ता बताई।

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को मनाया जाने वाला पर्व श्रावणी वैदिक काल से ही द्विजाति के लिए आत्मशोधन कर पुण्य पर्व मनाया जाता है। इसे उपाकर्म भी कहा जाता है। इसी उपाकर्म श्रावण में तृतीय वर्ष में मल या अधिमास मनाया जाता है। इस उपाकर्म में मुख्यतः तीन अंग होते हैं। स्नान, तर्पण और सर्पोपस्यात। ऋषि पूजन यज्ञोपवीड धारणादि। श्रावणी का स्नान साधारण स्नान नहीं है। एक प्रकार से कल्याणमिलापी पुरुष का अभिषेक है जो उसके शरीर को सर्वधा शुद्ध बना देता है। इस माह में कांवड़ यात्रा भगवान शिव त्रिविध कष्ट दूर करने वालेमहाशिव का रूद्राभिषेक किया जाता है। इस वर्ष के सोमवार-प्रथम सोमवार 10 जुलाई, द्वितीय सोमवार 17 जुलाई, तृतीय सोमवार 24 जुलाई, चतुर्थ सोमवार 31 जुलाई, पांचवां सोमवार 7 अगस्त, छठा सोमवार 14 अगस्त, सातवां सोमवार 21 अगस्त तथा आठवां सोमवार 28 अगस्त 2023 पर महापूजा का विशेष विद्यान हैं। 15 जुलाई 2023 शनिवार मास शिवरात्रि का विशेष विद्यान है। पूरे भारत तथा विदेशों में भी महाशिव परिवार की पूजा होती है। बारह ज्यातिर्लिंगों में पूजा करने वाले भक्तों की अपार भीड़ होती है। जैसे- सौराष्ट्र सोमनाथ से बुद्धिमाज्ञेय तु केदारं घुरमेशं तु शिवालये ।इन 12 ज्योतिर्लिंगों की विशिष्ट पूजा होती है। जिसमें बिल्बपत्र, भांग धतूर, बेल फल आदि पंचामृत से अमरनाथ महाशिव प्रसन्न होते हैं। इस साल अमरनाथ जी की विशेष व्यवस्था है। तीर्थ स्थानों हरिद्वार आदि कांवड़ भारी शिवभक्तों के लिए सेवा का प्रबन्ध है। इसमें यज्ञोत्पर्व ऋषि आदि तर्पण भी करते हैं।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं त्रिधायुधम्।
त्रिजन्म पापसंघारम् बिल्बपत्रं शिवावर्णम।।

शिव आशुतोष है। इनके गुणों का वर्णन करना असम्भव है।

शिवमहित्म श्लोक में लिखा है-

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं
सिंधुपात्रे-तदपि तवगुणानामीश पारं नयाति।
भगवान अर्द्धनारीश्वरं तत् प्रणमामि
सदा शिवालिंगम्
मान सहित विष खायके, शम्भु भये जगदीश।
विनामान अमृत पिये, राहु कटायो शीष।।

शिव महिम्नः सोत्र तथा महा शिवपुराण में भगवान शिव के गुणों का अपार वर्णन है।

वन्दे सुर गुरुम् महापतिम्
अहर्निशं वन्दे देव उमापतिम्। ❐

कटु सत्य

भगवान विष्णु गरुड़ पर बैठ कर कैलाश पर्वत पर गए। द्वार पर गरुड़ को छोड़ कर खुद शिव से मिलने अंदर चले गए। तब कैलाश की अपूर्व प्राकृतिक शोभा को देख कर गरुड़ मंत्रमुग्ध थे कि तभी उनकी नजर एक खूबसूरत छोटी सी चिड़िया पर पड़ी। चिड़िया कुछ इतनी सुंदर थी कि गरुड़ के सारे विचार उसकी तरफ आकर्षित होने लगे। उसी समय कैलाश पर यमदेव पधारे और अंदर जाने से पहले उन्होंने उस छोटे से पक्षी को आश्चर्य की दृष्टि से देखा। गरुड़ समझ गए कि उस चिड़िया का अंत निकट है और यमदेव कैलाश से निकलते ही उसे अपने साथ यमलोक ले जाएंगे।

गरुड़ को दया आ गई। इतनी छोटी और सुंदर चिड़िया को मरता हुआ नहीं देख सकते थे। उसे अपने पंजों में दबाया और कैलाश से हजारों कोश दूर एक जंगल में एक चट्टान के ऊपर छोड़ दिया, और खुद वापिस कैलाश पर आ गया। आखिर जब यमदेव बाहर आए तो गरुड़ ने पूछ ही लिया कि उन्होंने उस चिड़िया को इतनी आश्चर्य भरी नजर से क्यों देखा था। यमदेव बोले- 'गरुड़! जब मैंने उस चिड़िया को देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वो चिड़िया कुछ ही पल बाद यहां से हजारों कोस दूर एक नाग द्वारा खा ली जाएगी। मैं सोच रहा था कि वो इतनी जलदी इतनी दूर कैसे जाएगी, पर अब जब वो यहां नहीं है, तो निश्चित ही वो मर चुकी होगी।'

गरुड़ समझ गये- 'मृत्यु टाले नहीं टलती, चाहे कितनी भी चतुराई की जाए।'

इस लिए कृष्ण कहते हैं- करता तू वह है, जो तू चाहता है परंतु होता वह है, जो में चाहता हूं। कर तू वह, जो में चाहता हूं, फिर होगा वो, जो तू चाहेगा। ❑

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

वस्त्र और दवाइयों का वितरण

गत 29 जुलाई को जिला मयूर में सेवा भारती ने राहत शिविर अयोजित किया। इसमें बाढ़ पीड़ित 141 लोगों को राम मंदिर मयूर विहार के सौजन्य से वस्त्र दिए गए। राम मंदिर की कार्यकारिणी के सदस्य शारदा प्रसाद जी, शिक्षिका और निरीक्षका आदि लोग उपस्थित रहे। शिविर में बिस्कुट, पानी की बोतलें और 110 मरीजों की जांच कर होम्योपैथिक और एलोपैथिक दवाइयां दी गई। वहीं एक अन्य राहत शिविर में लेडिज क्लब ऑफ रोजवुड सोसायटी मयूर विहार फेज-1 एक्सटेंशन ने 70 बच्चों को स्टेशनरी, 8 स्कूल बैग वितरित किए। 30 जुलाई को इंद्रप्रस्थ जिले के यमुना बैंक और रेनी वेल में भी राहत और चिकित्सा शिविर आयोजित किए गए।

मासिक कीर्तन-भजन

प्रत्येक माह की भांति जुलाई माह की पूर्णिमा, दिनांक 03 जुलाई 2023 को सेवा भारती स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प में भजन-कीर्तन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सेवा बस्ती की महिलाओं एवं बालिकाओं ने भाग लिया। केंद्र की शिक्षिकाओं तथा बालिकाओं ने भी भजन-कीर्तन कार्यक्रम में भाग लिया। भजन-कीर्तन में कुल 80 लोगों ने भाग लिया। कीर्तन के उपरांत उपस्तिथ सभी लोगों को हलवा का प्रसाद वितरित किया गया।

बेटियों की उपलब्धि

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प के कोचिंग केंद्र में अध्ययन करने वाले 10वीं एवं 12वीं के बच्चों का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत उतीर्ण होने का रहा। 12वीं कक्षा की कुछ छात्राओं ने इस बार की परीक्षा में बहुत अच्छे अंक प्राप्त किए।

इनमें एक है प्रिया भारती। इनके पिता हैं श्री पारस भारती। प्रिया कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन की निवासी हैं। इनके पिताजी ठेली पर फल विक्रेता का कार्य करते हैं। इन्होंने सीबीएसई बोर्ड की 12वीं की परीक्षा में 89% अंक प्राप्त किए हैं।

दूसरी हैं प्रिया पासवान। इनके पिताजी भीम पासवान एक निजी कंपनी में मजदूरी करते हैं। प्रिया पासवान भी कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन की निवासी हैं। इन्होनें सीबीएसई बोर्ड की 12वीं की परीक्षा में 75% अंक प्राप्त किए हैं।

तीसरी हैं सलोनी। इनके पिताजी श्री रामप्रवेश प्रसाद राजमिस्त्री का काम करते हैं। सलोनी दीपक कॉलोनी, दिलशाद गार्डन की निवासी हैं। इन्होनें सीबीएसई बोर्ड की 12वीं की परीक्षा में 74% अंक प्राप्त किए हैं।

चौथी हैं अंशु कुमारी, जो कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन की निवासी हैं। इन्होनें सीबीएसई बोर्ड की 12वीं की परीक्षा में 74% अंक प्राप्त किए हैं। इनके पिताजी श्री सहदेव प्रसाद राजमिस्त्री हैं।

स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प इन सभी बच्चों को शुभकानाएं देता है तथा इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 अगस्त, 2023, प्रकाशन तिथि-5 अगस्त, 2023
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

यमुना बैंक में बाढ़ पीड़ितों की सेवा

गत 27 जुलाई को जिला इंद्रप्रस्थ में लायंस क्लब द्वारा यमुना बैंक में 150 बाढ़ पीड़ित परिवार को तिरपाल, मच्छर दानी और टॉर्च बांटी गई। उसके बाद 3 बजे से दवाई दी गई। रैनी वैल 7 पर भी दवाई दी गई। इन दोनों जगहों पर सभी कार्यकर्ताओं, सेवा भारती वैन के भाई श्रवण जी, शिक्षिका, निरीक्षिका का सहयोग रहा। इसी दिन जिला इंद्रप्रस्थ में 2 जगहों पर राहत शिविर लगाए गए। दोनों ही शिविर में आज होम्योपैथी की दवाई दी गई। डॉक्टर द्वारा रैनी वैल पर दवाई लेने आई महिला को नेपकिन भी दिया गया।

अक्षरधम खेलगांव में चिकित्सा शिविर

गत दिनों सेवा भारती इन्द्रप्रस्थ जिला पूर्वी विभाग के कार्यकर्ताओं, शिक्षिकाओं, निरिक्षिकाओं ने अक्षरधाम लगांव में बाढ़ से प्रभावित भाई-बहनों के लिए मेडिकल कैंप लगाया गया। इसमें उन्हें दवाइयाँ और पानी की बोतलें दी गईं। इससे पहले कार्यकर्ताओं ने इस क्षेत्र का सर्वेक्षण किया। इसमें दो मुख्य समस्याएं सामने आई थीं पानी और शौचालय की। दोनों ही समस्याओं का समाधान कर दिया गया है। कुछ कार्यकर्ता बहनें कुछ कपड़े भी लाई थीं वो भी वितरण किया गया। प्रांत से श्री हरिओम जी भाईसाहब भी उपस्थित थे।

सबोली में मना कारगिल विजय दिवस

सेवा भारती भीष्म सेवा केन्द्र प्रतापनगर सबोली जिला नंद नगरी की शिक्षिका व कार्यकर्ता द्वारा 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाया गया। बाल संस्कार के बालकों ने कारगिल के बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें अंकुर प्रथम स्थान पर रहे। कार्यक्रम में यमुना विहार विभाग मंत्री का आशीर्वाद मिला।

मुद्रक/संपादक/प्रकाशकः डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।